

BPCC-103 व्यक्तिगत भिन्नताओं का मनोविज्ञान



“शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।”

— इन्दिरा गांधी



ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

“Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances.”

— Indira Gandhi

व्यक्तिगत भिन्नताओं का मनोविज्ञान

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. डी. गोपाल
निदेशक, एस.ओ.एस.एस
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. विमला वीराराघवन
(अध्यक्ष), पूर्व एमेरिटस प्रोफेसर
मनोविज्ञान संकाय
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. पूर्णिमा सिंह
मानविकी और सामाजिक
विज्ञान स्कूल,
आईआईटी, नई दिल्ली

डॉ. उपदेश कुमार
वैज्ञानिक जी, हेड मेंटल हेल्थ डिवीजन
डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ
साइकोलॉजिकल रिसर्च,
डीआरडीओ, दिल्ली

डॉ. शिल्पा पंडित
एसोसिएट प्रोफेसर दर्शनशास्त्र,
मनोविज्ञान और वैज्ञानिक विरासत का
विभाग, चिन्मय विश्वविद्यापीठ,
एर्नाकुलम, केरल

डॉ. अरविंद कुमार मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर
ZHCES, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज,
जेएनयू, नई दिल्ली

प्रो. सुहास शेतगोवेकर
मनोविज्ञान संकाय,
एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मोनिका मिश्रा
मनोविज्ञान के सहायक प्रोफेसर,
मनोविज्ञान,
एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्मिता गुप्ता
मनोविज्ञान के सहायक प्रोफेसर
एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. स्वाति पात्रा (संयोजक)
मनोविज्ञान संकाय
एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम प्रस्तुति दल

खंड/इकाई	नाम	इकाई लेखक
खंड 1	व्यक्तिगत भिन्नताएँ	
इकाई 1	व्यक्तित्व एवं वैयक्तिक भिन्नताएं	प्रो. स्वाति पात्रा, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 2	व्यक्तित्व का मूल्यांकन	प्रो. स्वाति पात्रा, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली एवं डॉ. रितु शर्मा, सहायक प्रोफेसर, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा
खंड 2	बुद्धि एवं अभिज्ञमता	
इकाई 3	बुद्धि की संप्रत्यय एवं सांवेगिक बुद्धि	सुनंदा पटनाइक, सहायक प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
इकाई 4	बुद्धि के सिद्धांत	मौसुमी सेठी, सहायक प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
इकाई 5	बुद्धि का मूल्यांकन	डॉ. मनस्विनी दास, सहायक प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
इकाई 6	अभिज्ञमता: संप्रत्यय एवं मापन	डॉ. मनस्विनी दास, सहायक प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर
खंड 3	मनोविज्ञान में भारतीय विचार	
इकाई 7	भारतीय और पाश्चात्य मनोविज्ञान में अंतर	प्रो. किरण कुमार के सालागामे, मनोविज्ञान के पूर्व प्रोफेसर, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
इकाई 8	भारतीय चिंतन में आत्म की संप्रत्यय	प्रो. किरण कुमार के सालागामे, मनोविज्ञान के पूर्व प्रोफेसर, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर
खंड 4	अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता	
इकाई 9	अभिप्रेरणा	प्रो. सुहास शेतगोवेकर, मनोविज्ञान संकाय, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 10	सृजनात्मकता	प्रो. स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली
खंड 5	प्रैक्टिकल के लिए दिशा निर्देश	प्रो. स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक: प्रो.स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली
मुख्य संपादक: प्रो.स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एस.ओ.एस.एस, इग्नू, नई दिल्ली

इकाई अनुवादक

इकाई 1 से 4 और इकाई 8 से 10	:	राघवेन्द्र पती त्रिपाठी, नई दिल्ली
इकाई 5 और 6	:	राजेन्द्र पाण्डेय, नई दिल्ली
इकाई 7	:	विभा शर्मा, नई दिल्ली
खण्ड 5	:	सुनीता देवी, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	श्री हेमन्त परीदा सेक्शन ऑफिसर (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	श्री सुरेश कुमार सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ इग्नू, नई दिल्ली
--	---	---

सितम्बर, 2020

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN: 978-93-90496-24-2

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली-110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट <http://www.ignou.ac.in> देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुल सचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : राज प्रिंटर्स

कवर डिजाइनर : अरविन्दर चावला, एडीए ग्राफिक्स, नई दिल्ली

मुद्रित : हाईटेक ग्राफिक्स, डी-4/3, ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

विषय-वस्तु

	पृष्ठ सं.
पाठ्यक्रम परिचय	7
खंड 1 व्यक्तिगत भिन्नताएं	11
इकाई 1 व्यक्तित्व और वैयक्तिक भिन्नताएं	13
इकाई 2 व्यक्तित्व का मूल्यांकन	38
खंड 2 बुद्धि एवं अभिज्ञमता	59
इकाई 3 बुद्धि की संप्रत्यय एवं सांवेगिक बुद्धि	61
इकाई 4 बुद्धि के सिद्धांत	85
इकाई 5 बुद्धि का मूल्यांकन	105
इकाई 6 अभिज्ञमता संप्रत्यय एवं मापन	128
खंड 3 मनोविज्ञान में भारतीय विचार	149
इकाई 7 भारतीय और पाश्चात्य मनोविज्ञान में अंतर	151
इकाई 8 भारतीय चिंतन में आत्म की संप्रत्यय	176
खंड 4 अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता	195
इकाई 9 अभिप्रेरणा	197
इकाई 10 सृजनात्मकता	222
खंड 5 प्रयोग कार्य/ प्रैक्टिकल के लिए दिशा निर्देश	243

पाठ्यक्रम परिचय

बीपीसीसी-103: व्यक्तिगत भिन्नताओं का मनोविज्ञान कोर्स 6 क्रेडिट का है जो बीए ऑनर्स मनोविज्ञान के सेमेस्टर -2 में है। यह एक कोर (core) कोर्स है जो, मनोविज्ञान में ऑनर्स के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत है। यह पाठ्यक्रम आपको मनोविज्ञान में भिन्नताओं की संप्रत्यय की समझ प्रदान करेगा। यह व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता जैसे व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करेगा। यह आत्म की संप्रत्यय (concept of self) के संबंध में भारतीय परिप्रेक्ष्य का भी वर्णन करेगा और व्यक्तिगत भिन्नता के संबंध में भारतीय परिप्रेक्ष्य और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य के बीच के अंतर के प्रति दृष्टि आकर्षित करेगा।

पाठ्यक्रम के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:

उद्देश्य

- 1) व्यक्तिगत भिन्नताओं की संप्रत्यय का परिचय कराना;
- 2) व्यक्तित्व की संप्रत्यय को परिभाषित करना और समझना;
- 3) बुद्धि की संप्रत्यय और प्रकारों को समझना;
- 4) बुद्धि के सिद्धांतों का व्याख्या करना;
- 5) व्यक्तित्व की संप्रत्यय को भारतीय दृष्टिकोण से समझना
- 6) अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता की संप्रत्यय का परिचय कराना

इस पाठ्यक्रम में चार खंड और कुल दस इकाइयाँ शामिल हैं जिन्हें आपको अपने दूसरे सेमेस्टर की छह महीने की अवधि के दौरान अध्ययन और पूरा करने की आवश्यकता है। आपका प्रत्येक सेमेस्टर के अंत में असाइनमेंट और एक टर्म-एंड परीक्षा (Term End Examination, TEE) के माध्यम से निरंतर मूल्यांकन होगा। असाइनमेंट इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आप असाइनमेंट www-ignou.ac.in>student support>downloads>assignments पर डाउनलोड कर सकते हैं। अपने असाइनमेंट की तैयारी और जमा करने के लिए असाइनमेंट पर निर्देशात्मक दिशानिर्देशों का संदर्भ लें। आप अपनी टर्म-एंड परीक्षा (टीईई) की तैयारी के लिए डाउनलोड के तहत उपलब्ध पिछले वर्ष के प्रश्न पत्रों को भी देख सकते हैं।

आपको अपने असाइनमेंट पूरा करने के लिए और परीक्षा के लिए सफलतापूर्वक तैयारी करने हेतु विभिन्न खंडों और इकाइयों में प्रस्तुत, इस पुस्तक की पाठ्यक्रम सामग्री का अध्ययन करना होगा। प्रत्येक इकाई एक संरचित तरीके से लिखे गए अध्याय की तरह है। इसमें इकाई/यूनिट में सेक्शन के बीच में **स्व-आकलन प्रश्न** (Self Assessment Questions SAQ) होते हैं ताकि आप अपनी प्रगति की जांच कर सकें और अधिक स्पष्टीकरण के लिए विषय वस्तु पर जा सकें। यह आपके सीखने को बेहतर बनाने में मदद करेगा। इसके अलावा, **इकाई के अंत में प्रश्न** (Unit End Questions) भी होते हैं जो आपको इकाई की समग्र समझ में आपकी सहायता करेंगे। **महत्वपूर्ण शब्द** (key words) अनुभाग में, प्रमुख शब्दों पर प्रकाश डाला गया है जो आपको यूनिट में सीखे गए मुख्य शब्दों और संप्रत्ययों को याद करने में मदद करेगा। यूनिट में चर्चा की गई एक विशेष बिंदु की अधिक समझ हासिल करने के लिए **संदर्भ** (References) अनुभाग आपको विशिष्ट अध्ययन और लेखों को संदर्भित करने में मदद करेगा। प्रत्येक इकाई के अंत में, आपको इकाई की विषयों के प्रति और अधिक जानकारी के लिए **पाठ्य पुस्तकें** (Suggested Readings) दिये गए हैं। इस प्रकार, इस स्व शिक्षण सामग्री/सेल्फ लर्निंग मटीरियल (SLM) के विभिन्न पहलुओं

को आपको बेहतर तरीके से सीखने में मदद करने के लिए डिजाइन किया गया है। ये विशेषताएं यह भी सुनिश्चित करती हैं कि शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच अंतर या दूरी को कम करने के लिए, शिक्षक पाठ्यक्रम सामग्री के माध्यम से ही शिक्षार्थियों को मार्गदर्शन करते हैं।

इग्नू शिक्षण और सीखने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण का अनुसरण करता है। इसके तहत इसमें **मुद्रित पाठ्यक्रम सामग्री, ऑडियो और वीडियो सामग्री** भी है। पाठ्यक्रम सामग्री की सॉफ्ट प्रतियां इ-ज्ञानकोष (egyankosh) के माध्यम से इग्नू की वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं। **ज्ञानवाणी** (संवादात्मक रेडियो परामर्श), **ज्ञानदर्शन** (टेली कॉन्फ्रेंस) और **वेब सम्मेलन** के माध्यम से शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच बातचीत की सुविधा भी है। ज्ञानवाणी एफएम (105.6 चैनल) पर उपलब्ध है। ज्ञानदर्शन एक टेलीविजन चैनल है, जो सभी केबल ऑपरेटरों के लिए रखना नितांत जरूरी है। ज्ञानवाणी और ज्ञानदर्शन मासिक अनुसूची के बारे में जानकारी इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध है। वेब सम्मेलन मनोविज्ञान संकाय के द्वारा आयोजित किए जाते हैं और आपको अपने क्षेत्रीय केंद्र से इस के बारे में जानकारी मिलेगी। आप अपने सीखने को एक नए उच्च स्तर पर ले जाने के लिए इग्नू में सीखने की इन सभी विशेषताओं का उपयोग कर सकते हैं और इसे वास्तव में समृद्ध अनुभव बना सकते हैं।

खंडों और इकाइयों का संक्षिप्त परिचय

प्रत्येक चार खंडों और उसमें निहित इकाइयों की एक संक्षिप्त रूपरेखा आपके संदर्भ के लिए नीचे दी गई है जिसे आप इकाइयों के बारे में विस्तार से अध्ययन करने से पहले देख सकते हैं।

खंड 1 व्यक्तिगत भिन्नताएं

आपको व्यक्तिगत भिन्नताओं की संप्रत्यय से परिचित कराएगा। व्यक्तिगत भिन्नताओं को, मनोविज्ञान का मुख्य मर्म निचोड़ कहा जा सकता है। यह मानव व्यवहार के सभी महत्वपूर्ण 'क्यों' का जवाब देता है। खंड 1 में दो इकाइयाँ हैं।

इकाई 1 व्यक्तित्व और वैयक्तिक भिन्नताएं

यह व्यक्तिगत भिन्नताओं की संप्रत्यय पर चर्चा करता है और इसका अर्थ बताता है। वैयक्तिक भिन्नता में योगदान देने वाले एक महत्वपूर्ण सूचक व्यक्तित्व की भी चर्चा की है। इसके अलावा, व्यक्तित्व के बारे में विभिन्न सिद्धांतों पर भी चर्चा होता है।

इकाई 2 व्यक्तित्व का मूल्यांकन

यह व्यक्तित्व के व्यक्तिगत अंतर का मूल्यांकन करने के मुद्दे पर केंद्रित है। यह व्यक्तित्व के मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों और व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए विभिन्न तकनीकों के फायदे और कमियों का वर्णन करता है।

खंड 2 बुद्धि एवं अभिक्षमता

व्यक्तिगत भिन्नताओं के दो प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है जिसका महत्व मुख्यतः शैक्षिक और कैरियर के क्षेत्रों में होता है। खंड 2 में चार इकाइयाँ हैं।

इकाई 3 बुद्धि की संप्रत्यय एवं सांवेगिक बुद्धि

यह बुद्धि और सांवेगिक बुद्धि की संप्रत्यय पर चर्चा करता है। यह बुद्धि को परिभाषित करता है और बुद्धि के संबंध में प्रकृति-पोषण संबंधी बहस की व्याख्या करता है।

इकाई 4 बुद्धि के सिद्धांत

यह इकाई/यूनिट मुख्य रूप से बुद्धि की स्वरूप को समझाने के लिए दिए गए विभिन्न सिद्धांतों पर केंद्रित है। पारंपरिक सिद्धांतों, सूचना प्रसंस्करण उपागम और संज्ञानात्मक सिद्धांतों पर प्रकाश डाला गया है।

इकाई 5 बुद्धि का मूल्यांकन

यह बुद्धि की माप की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करता है। बुद्धि से संबंधित विभिन्न परीक्षणों का भी वर्णन किया गया है।

इकाई 6 अभिक्षमता: संप्रत्यय एवं मापन

यह अभिक्षमता संप्रत्यय की व्याख्या करता है और इसका उपलब्धि, बुद्धि और अभिरुचि के साथ अंतर स्पष्ट करता है। अभिक्षमता का मूल्यांकन उनके फायदे और कमियों के साथ वर्णन किया गया है।

खंड 3 मनोविज्ञान में भारतीय विचार

मनोविज्ञान के लिए भारतीय दृष्टिकोण को विस्तृत करता है। मुख्य रूप से पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान का वर्चस्व रहा है। हालाँकि, भारत के पास मनोविज्ञान के विभिन्न पहलुओं से संबंधित ज्ञान का विशाल और समृद्ध प्रदर्शन है। यह खंड/ब्लॉक आपको मनोविज्ञान के, भारतीय दृष्टिकोण के बारे में अवगत कराएगा, जिससे आप इसकी सराहना कर सकेंगे। खंड 3 में दो इकाइयाँ हैं।

इकाई 7 भारतीय और पाश्चात्य मनोविज्ञान में अंतर

यह इकाई भारतीय और पाश्चात्य मनोविज्ञान के बीच के अंतर को उजागर करती है। आप भारतीय वैश्विक दृष्टिकोण के बारे में जानेंगे और कुछ प्रमुख पहलुओं पर पश्चिमी दृष्टिकोण को अलग कर सकते हैं। भारतीय मनोविज्ञान का अर्थ और कार्यक्षेत्र समझाया जाएगा। योग और ध्यान जैसी स्वदेशी प्रणालियों की भूमिका पर भी चर्चा की जाएगी।

इकाई 8 भारतीय चिंतन में आत्म की संप्रत्यय

इस इकाई में, आप आत्म, पहचान और आत्म संप्रत्यय को भारतीय परिप्रेक्ष्य में जिस तरह से माना जाता है, की अवधारणा के बारे में सीखते हैं। इन पर पाश्चात्य दृष्टिकोण की भी चर्चा की गई है। आत्म के विकास में भारतीय परंपराओं की भूमिका की चर्चा विस्तृत है। भारतीय परिवार प्रणाली और संस्कृति प्रमुख रूप से आत्म और पहचान के विकास को प्रभावित करती है।

खंड 4 अभिप्रेरणा एवं सृजनात्मकता

व्यक्तिगत अंतर के दो महत्वपूर्ण तत्वों पर ध्यान केंद्रित करता है, वह है, अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता। अभिप्रेरणा और सृजनात्मकता के बिना, मनुष्य की कोई प्रगति और उपलब्धि नहीं हो सकती है और समाज का विकास और उन्नति नहीं हो सकती है। इसलिए इन दोनों संप्रत्ययों को समझना महत्वपूर्ण है। खंड/ब्लॉक 4 में दो इकाइयाँ हैं।

इकाई 9 अभिप्रेरणा

यह इकाई अभिप्रेरणा के परिभाषा और प्रकारों पर केंद्रित है। इसके अलावा, यह अभिप्रेरणा बढ़ाने के लिए विभिन्न रणनीतियों को विस्तृत करता है। इसका हमारे जीवन के विभिन्न

पहलुओं के लिए निहितार्थ है। यह अभिप्रेरणा के सिद्धांतों पर भी चर्चा करता है, और आत्म नियमन और आत्म-वृद्धि की संप्रत्ययों की व्याख्या करता है।

इकाई 10 सृजनात्मकता

इस इकाई में, आप सृजनात्मकता के अर्थ के बारे में जानेंगे। यह अलग-अलग चरणों में है, जिसके माध्यम से सृजनात्मकता सोच की प्रगति होती है। सृजनात्मकता के लिए विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों पर चर्चा की है। सृजनात्मकता, जैसा कि यह अन्य संप्रत्ययों से संबंधित है जैसे बुद्धि और व्यक्तित्व पर भी चर्चा की है। इसके अलावा, आप इस बारे में भी सीखेंगे कि विभिन्न तरीकों से सृजनात्मकता को कैसे पहचाना और बढ़ाया जा सकता है।

खंड 5 प्रयोग कार्य/प्रेक्टिकल के लिए दिशा निर्देश

आपको बीपीसीसी-103 का प्रैक्टिकल घटक का विवरण प्रदान करता है। प्रैक्टिकल 2 क्रेडिट का होता है जिसे आपको पूरा करना होता है ताकि आपका कोर्स बीपीसीसी-103 (थ्योरी 4 क्रेडिट, प्रैक्टिकल 2 क्रेडिट) पूरा हो सके। बीपीसीसी 103 के थियोरी पाठ्यक्रम से संबंधित दो मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का संचालन प्रैक्टिकल में करना होता है। इसमें आप व्यक्तित्व और बुद्धि के क्षेत्र में परीक्षणों के बारे में जानेंगे। आपको इन परीक्षणों का संचालन करने की आवश्यकता होगी और परीक्षण निष्कर्षों की प्रशासन, प्रक्रिया सकोरिंग और व्याख्या की प्रक्रिया को जानना होगा। अंत में आप निर्धारित प्रारूप में प्रैक्टिकल नोटबुक/रिकॉर्ड लिखेंगे।



खंड 1

व्यक्तिगत भिन्नताएँ

Jignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 व्यक्तित्व एवं वैयक्तिक भिन्नताएँ*

रूपरेखा

- 1.1 उद्देश्य
- 1.2 परिचय
- 1.3 वैयक्तिक भिन्नताएं
 - 1.3.1 वैयक्तिक भिन्नताओं में योगदान देने वाले कारक
- 1.4 व्यक्तित्व की परिभाषा
 - 1.4.1 व्यक्तित्व के पहलू
- 1.5 व्यक्तित्व के सिद्धांत
 - 1.5.1 व्यक्तित्व का मनोवेगीय सिद्धांत
 - 1.5.2 व्यवहारवादी एवं संज्ञानात्मक सिद्धांत
 - 1.5.3 मानवतावादी सिद्धांत
 - 1.5.4 व्यक्तित्व के विशेषक सिद्धांत
 - 1.5.4.1 पाँच कारक सिद्धांत
 - 1.5.4.2 जैविक विशेषक सिद्धांत
 - 1.5.5 व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था एवं व्यवहारवादी निशेध व्यवस्था
 - 1.5.6 स्व तथा व्यक्तित्व के बारे में भारतीय परिप्रेक्ष्य
- 1.6 सारांश
- 1.7 प्रमुख शब्द
- 1.8 स्व आकलन प्रश्नों के उत्तर
- 1.9 इकाई के अंत में प्रश्न
- 1.10 संदर्भ
- 1.11 अनुशासित अध्ययन

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप निम्न कार्यों को करने में सक्षम होंगे :

- वैयक्तिक भिन्नताओं की अवधारणा की व्याख्या करने में;
- व्यक्तित्व को परिभाषित करने में;
- व्यक्तित्व के पहलुओं को जानने में;
- व्यक्तित्व के अनेक सिद्धांतों पर परिचर्चा करने; तथा
- स्व एवं व्यक्तित्व के बारे में भारतीय परिप्रेक्ष्य की व्याख्या करने में।

1.2 परिचय

व्यक्तित्व वैयक्तिक भिन्नताओं के संकेतकों में से एक है। यह सामान्य रूप से प्रयोग किया जाने वाला पारिभाषिक शब्द है। हालांकि, हमें इसे एक उचित तरीके से समझने की

*प्रोफेसर स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

आवश्यकता होती है क्योंकि इसके निहितार्थ बहुत से क्षेत्रों पर पड़ते हैं जिसमें हमारी शैक्षिक सफलता, अंतर्वैयक्तिक संबंध, सामाजिक व्यवहार तथा नौकरी का प्रदर्शन शामिल हैं। व्यक्तित्व विशेषक हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य एवं कुशलक्षेम को भी प्रभावित करते हैं। वे अस्थायी एवं परिस्थिति कारकों से परे हमारी प्रसन्नता के लिए सशक्त रूप से सह संबंधित होते हैं। वैयक्तिक भिन्नताओं को अन्य पहलुओं जैसे बुद्धि, सृजनात्मकता, अभिरूचियों (शैक्षिक एवं व्यावसायिक) तथा नेतृत्व कौशल में भी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार की व्यक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन हमारी इस समझ में व्यापक योगदान देता है कि हम कौन हैं।

इस इकाई में हम मुख्य रूप से वैयक्तिक भिन्नताओं की अवधारणा एवं कारकों के बारे में परिचर्चा करेंगे जो वैयक्तिक भिन्नताओं में योगदान देते हैं। इससे आगे, व्यक्तित्व शब्द को परिभाषित किया जाएगा तथा इसके सिद्धांतों की विस्तृत रूप में व्याख्या की जाएगी जिसमें व्यक्तित्व का मनोवेगीय सिद्धांत, व्यवहारवादी एवं संज्ञानात्मक सिद्धांत, मानवतावादी सिद्धांत तथा व्यक्तित्व के विशेषक सिद्धांत (पंच कारक सिद्धांत एवं जैविक विशेषक सिद्धांत) शामिल हैं। इस इकाई में स्व तथा व्यक्तित्व के बारे में भारतीय परिप्रेक्ष्य के अलावा व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था एवं व्यवहारवादी निशेध के बारे में भी बताया जाएगा।

1.3 वैयक्तिक भिन्नताएँ

जैसा कि पारिभाषिक शब्द वैयक्तिक भिन्नताएँ संकेत देता है, यह इससे संबंधित है कि व्यक्ति किस प्रकार से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। भिन्न लोगों की अलग-अलग अभिरूचियां होती हैं और उनका व्यवहार इन्हीं अभिरूचियों, पसंद, नापसंद, मूल्यों एवं आस्थाओं/ धारणाओं आदि से प्रभावित होता है। यहाँ तक कि यदि हम लोग समान आयु वर्ग या लिंग के हों, तब भी हम जानते हैं कि हम दूसरों से भिन्न कैसे हैं तथा दूसरे लोग भी इन भिन्नताओं को जानते हैं। उदाहरणार्थ, आप मित्रों के साथ नाचना एवं गपषप करना पसंद कर सकते हैं परन्तु हो सकता है कि आपकी मित्र इसे पसंद न करे बल्कि वह चित्रकारी एवं केवल कुछ मित्रों के साथ बातचीत करना पसंद करती है। इसके अलावा, आपका मित्र फुटबाल खेलने में बहुत अच्छा हो सकता है परन्तु आप फुटबाल में उतने अच्छे नहीं हो सकते। यदि आप अपने आस-पास के लोगों को ध्यान से देखें तब आप इस प्रकार की बहुत ही भिन्नताओं को पाएंगे। एक विद्यार्थी भाषा में अच्छा है जबकि उसी कक्षा में एक अन्य विद्यार्थी विज्ञान में अच्छा हो सकता है। इस प्रकार, हम व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिरूचि, अभिप्रेरणा तथा अन्य में वैयक्तिक भिन्नताएँ पाते हैं।

मनोविज्ञान इन्हीं वैयक्तिक भिन्नताओं को बताने की कोशिश करता है तथा भिन्नताओं की प्रकृति, इसे प्रभावित करने वाले कारकों और वैयक्तिक भिन्नताओं के पहलुओं का अध्ययन करता है। आप आश्चर्य कर रहे होंगे कि एक तरफ तो हम कहते हैं कि व्यक्तियों में समानताएँ होती हैं जैसे कि विकास की अवस्थाएँ जिसमें समान चारित्रिक विशेषताएँ, विकासात्मक कार्य एवं आवश्यकताएँ होती हैं, और वहीं दूसरी तरफ हम कहते हैं कि वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं। परन्तु इसमें विरोधाभास बिल्कुल नहीं है। यद्यपि, एक विशेष विकासात्मक अवस्था के व्यक्ति समान आवश्यकताओं एवं मांगों को साझा करते हैं, वे अपने अनुवांशिक एवं पर्यावरण संबंधित कारकों की वजह से एक दूसरे से अलग भी होते हैं।

इस प्रकार वैयक्तिक भिन्नताओं का मनोविज्ञान व्यक्तियों के बीच प्रत्यक्ष भिन्नताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसे 'विभेदक मनोविज्ञान' भी कहा जाता है जिसमें स्वयं तथा अन्य में पाई जाने वाली इन भिन्नताओं तथा अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक निर्धारकों का अध्ययन

किया जाता है। वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन हमें एक व्यक्ति द्वारा एक विशेष तरीके से व्यवहार करने की संभावना को समझने, व्याख्या करने एवं अनुमान लगाने के योग्य बनाता है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व, बुद्धि, अभिप्रेरणा, सृजनात्मक तथा समस्या समाधान जैसे पहलुओं का अध्ययन करता है। यह इस पर ध्यान देता है कि वह क्या है जो व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है। जैसा कि टामस कैमॉरो - प्रिमुजिक ने कहा है कि वैयक्तिक भिन्नता के शोधकर्ताओं का लक्ष्य व्यक्तित्व में अन्तर्निहित सर्वाधिक सामान्य पहलुओं को पहचानना है तथा व्यक्ति के विचार, संवेग एवं व्यवहार में भिन्नताओं एवं समानताओं का अनुमान लगाने के लिए सैद्धांतिक वर्गीकरण की अवधारणा बनाना है। इस प्रकार, वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक निर्धारकों पर ध्यान देते हुए मानव व्यवहार के 'कैसे' और 'क्यों' की व्याख्या करने की कोशिश करता है।

1.3.1 वैयक्तिक भिन्नताओं में योगदान देने वाले कारक

जिन वैयक्तिक भिन्नताओं पर हम ध्यान दे रहे हैं वे मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से संबंधित हैं। लोग अपनी शारीरिक विशेषताओं में भी भिन्न होते हैं। सामान्य रूप से हम परिवार के बाहर के लोगों की तुलना में अपने माता-पिता एवं भाई-बहनों से अधिक समानता रखते हैं। ये शारीरिक समानताएं मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की तुलना में अधिक स्पष्ट होती हैं। आनुवंशिकता की भूमिका तब सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब हम शारीरिक विशेषताओं जैसे काली आंखें, गोरा रंग तथा ऐसे अन्य पहलुओं की बात करते हैं।

हालांकि, जब हम व्यक्तित्व या बुद्धि जैसी मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की बात करते हैं तब क्या हम अपने माता-पिता के समान होते हैं या फिर अलग होते हैं? इनमें आनुवंशिकी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है अथवा पर्यावरणीय कारकों जैसे बच्चे के पालन-पोषण के तौर-तरीके, प्रारंभिक उद्दीपित पर्यावरण, विद्यालय का अच्छा पर्यावरण आदि इन मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के विकास पर प्रभाव डालते हैं? यह प्रकृति (आनुवंशिकता) बनाम पालन-पोषण (पर्यावरण) वाद-विवाद (nature vs. nurture controversy) वैयक्तिक भिन्नताओं के अध्ययन का केंद्र है। इससे संबंधित अध्ययन का एक नया क्षेत्र 'व्यवहारवादी आनुवंशिकी' है जो वैयक्तिक भिन्नताओं के जैविक आधार के अध्ययन से संबंधित है। विभेदक मनोविज्ञान में अनेक शोध विधियों, मस्तिष्क इमेजिंग से लेकर प्रारंभिक बाल्यावस्था के अनुभवों के प्रभाव का अध्ययन का प्रयोग किया है। इसमें वंशाणुओं की भूमिका के साथ-साथ मानव व्यवहार पर सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

स्व आकलन प्रश्न 1

- 1) वैयक्तिक भिन्नताएं दो व्यक्तियों के बीच भिन्नताओं का अध्ययन करती हैं। सही या गलत।
- 2) वैयक्तिक भिन्नताओं के मनोविज्ञान को के रूप में भी जाना जाता है।
- 3) दो प्रमुख कारक जो वैयक्तिक भिन्नता को प्रभावित करते हैं, वे हैं एवं

1.4 व्यक्तित्व की परिभाषा

'व्यक्तित्व' शब्द का इतने सामान्य रूप में प्रयोग किया जाता है कि हमें व्यक्तित्व को परिभाषित करने के वैज्ञानिक तरीके से व्यक्तित्व के जन साधारण के भावार्थ को अलग करने की आवश्यकता है। हम प्रायः कहते हैं, 'उस व्यक्ति के पास महान व्यक्तित्व है',

‘उसके पास आकर्षक व्यक्तित्व है’, ‘उन दोनों भाईयों का व्यक्तित्व बहुत अलग है’, ‘मेरे दादाजी का व्यक्तित्व बहुत सशक्त था’ या उसका कोई व्यक्तित्व ही नहीं है। तो व्यक्तित्व से हमारा क्या तात्पर्य है? इसमें क्या शामिल हैं? ‘व्यक्तित्व’ शब्द लैटिन भाषा के ‘persona’ से लिया गया है जिसका अर्थ है ‘मुखौटा’। आप स्वयं का कुछ पहलु बाहर दिखा रहे हैं, परन्तु आप अन्दर से मुखौटे के पीछे वास्तव में भिन्न हो सकते हैं। जब हम किसी व्यक्ति को शर्मिला या तेज-तर्रार के रूप में बताते हैं तब हमारा मतलब व्यक्तित्व से होता है। दूसरे शब्दों में, यह व्यवहार के विशेष तरीके से संबंधित होता है। परन्तु, व्यक्तित्व इतना सरल नहीं है चूंकि हम एक जटिल एवं सतत परिवर्तनशील संसार में रहते हैं। इस प्रकार, प्रतिदिन प्रयोग किया जाने वाला शब्द ‘व्यक्तित्व’ व्यक्ति क द्वारा निर्भाई जाने वाली बाहरी भूमिकाओं या चरित्र को स्पष्ट करता है एवं व्यवहार करने के अच्छे एवं आकर्षक तरीकों से संबंधित होता है।

यदि हम व्यक्तित्व को वैयक्तिकता या वैयक्तिक भिन्नता रखने के संदर्भ में परिभाषित करते हैं तो यह अपने अर्थ को पूर्ण रूप से समाहित नहीं करता है। व्यक्ति शारीरिक विशेषताओं, उम्र, लिंग, राष्ट्रीयता, भाषा तथा अन्य बहुत से पहलुओं में भिन्न होते हैं जो कि व्यक्तित्व के दृष्टिकोण से पूर्णतया प्रासंगिक नहीं हो सकते हैं। अतः हमें वैयक्तिक भिन्नताओं के लिए मनोवैज्ञानिक विशेषताओं जैसे चिंतन, मानसिक योग्यता, समस्या समाधान, संवेग, अभिप्रेरणा एवं अभिरूचियों पर बल देने की आवश्यकता होती है।

हालांकि, यहाँ पर पुनः यह ध्यान देना चाहिए कि मानसिक योग्यताएं या बौद्धिक योग्यताएं व्यक्तित्व के अन्तर्गत नहीं आती हैं। व्यक्तित्व एवं बुद्धि में वैयक्तिक भिन्नताओं को मनोवैज्ञानिक प्रायः अलग-अलग तरीके से देखते हैं। इस प्रकार, व्यक्तित्व में गैर-बौद्धिक योग्यताएं निहित होती हैं। यहाँ मुद्दा यह है कि जब हम संवेग एवं मनोदशा अथवा अभिवृत्ति एवं आदतों के बारे में विचार करते हैं जो सभी गैर-बौद्धिक पहलू हैं तो क्या ये व्यक्तित्व का हिस्सा हो सकते हैं? एक व्यक्ति नाराज या दुःखी है, एक चिड़चिड़ा है, अथवा एक देर रात तक पढ़ना पसंद करता है अथवा किसी की समाज के विशिष्ट वर्ग के लिए आरक्षण नीति के प्रति सशक्त अभिवृत्ति है। इन सभी मामलों में, अस्थायी संवेग है जो दीर्घ अवधि तक नहीं रह सकता है। यद्यपि अभिवृत्ति एवं आदतें लम्बे समय तक रहती हैं परन्तु वे कुछ विशिष्ट प्रतिक्रियाओं या कार्यों से संबंधित होती हैं। जबकि, व्यक्तित्व स्थायी होने के साथ-साथ व्यापक होती है।

इस प्रकार, व्यक्तित्व (हस्लम, स्माइली एवं सांग, 2017) उन वैयक्तिक भिन्नताओं का संदर्भ देते हैं जो (1) स्वभाव से मनोवैज्ञानिक हैं, (2) बौद्धिक क्षेत्र से बाहर होती हैं, (3) क्षणिक अवस्था के बजाय चिरकालीन स्वभाव रखती हैं तथा (4) तुलनात्मक रूप से व्यापक स्वरूप की होती हैं। इसके आगे, यह अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक युक्तियों का भी अध्ययन करती है जो व्यक्ति के विचार संवेग एवं व्यवहार के चारित्रिक तरीके की व्याख्या करते हैं (फंडर, 1997)।

जैसा कि हम अभी तक देख चुके हैं कि जितना हमने सोचा था व्यक्तित्व उससे कहीं ज्यादा है। अब हम अनेक मनोवैज्ञानिकों के द्वारा दी गई व्यक्तित्व की कुछ परिभाषाओं को देखते हैं। गोर्डन आलपोर्ट ने 1937 में व्यक्तित्व मनोविज्ञान की प्रथम प्रमुख पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की। शुरुआत में उन्होंने व्यक्तित्व को “व्यक्ति के सभी जैविक जन्मजात स्वभावों, आवेगों, प्रवृत्तियों, स्वाभाविक इच्छाओं तथा सहज प्रवृत्तियों एवं अनुभव से अर्जित स्वभावों एवं प्रवृत्तियों के कुल योग” के रूप में परिभाषित किया। बाद में उन्होंने इसे संशोधित किया (1961, पृष्ठ - 28) तथा व्यक्तित्व को “व्यक्ति के अन्दर मनोशारीरिक व्यवस्थाओं का ऐसा

गतिशील संघटन जो व्यक्ति के चारित्रिक व्यवहार एवं विचार को निर्धारित करता है" के रूप में परिभाषित किया। यह परिभाषा निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं पर बल देती है :

- **व्यवस्था (Organization):** इस मत का संदर्भ देता है कि व्यक्तित्व संपूर्ण है। यह पूर्ण रूप से व्यक्ति है न कि व्यक्ति के कुछ पहलू। इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तित्व विशिष्ट एवं अद्वितीय है।
- **गतिशील (Dynamic):** यह संकेत देता है कि व्यक्तित्व की प्रकृति स्थिर नहीं बल्कि गतिशील है। यह पर्यावरण के प्रसंग में अनुकूलक एवं संवेदनशील है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व सतत आधार पर पर्यावरण के प्रति समायोजन करता रहता है। पर्यावरणात्मक एवं आंतरिक बलों के बीच संतुलन कायम किया जाता है।
- **मनोशारीरिक व्यवस्था (Psychophysical systems):** शारीरिक या जैविक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक या व्यक्तित्व के मानसिक पहलू दोनों शामिल होते हैं।
- **चारित्रिक व्यवहार एवं विचार (Characteristic behavior and thought):** उन विशेषकों के बारे में बताता है जो विचारों, सांवेगिक प्रतिक्रियाओं एवं व्यवहार के अपेक्षाकृत स्थिर एवं सतत तरीके का संकेत देते हैं।

इसी तरीके से, वाल्टर मिशेल (1973) बताते हैं कि व्यक्तित्व विचारों एवं संवेगों को शामिल करते हुए व्यवहार के विशिष्ट तरीके को समाहित करता है जो प्रत्येक व्यक्ति के अपने जीवन की परिस्थिति में समायोजन को विशेषित करता है।

यहाँ हमें व्यक्तित्व विशेषकों (traits) एवं अवस्थाओं (states) के बारे में थोड़ा अधिक जानना है। यह व्यक्तित्व के स्वभाव एवं परिस्थिति उपागमों के बीच अन्तर को संदर्भित करता है। व्यक्तित्व विशेषक एक आंतरिक स्वभाव या वरीयता को सूचित करते हैं। इस प्रकार, यह व्यक्तियों के बीच भिन्नताओं पर केंद्रित होता है कि - क्यों अलग-अलग व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं या व्यवहार में भिन्न होते हैं। जबकि, अवस्था उपागम व्यक्ति के अंदर की भिन्नताओं को स्पष्ट करती है कि क्यों वही व्यक्ति भिन्न परिस्थितियों में भिन्न प्रकार से सोचता, महसूस करता एवं व्यवहार करता है। एक पार्टी में आपका व्यवहार निश्चित रूप से कार्य स्थल के व्यवहार से अलग होता है। इस प्रकार, विशेषक प्रदर्शित करते हैं कि सामान्य तौर पर आप कैसा कार्य करते हैं या आपका ठेठ व्यवहार कैसा है; यह संकेत नहीं देता है कि एक विशेष परिस्थिति में आप कैसे कार्य करेंगे।

टर्कीमर, पीटरसन एंड हार्न, 2014 ने शोध में व्यक्तित्व विशेषकों के जैविक आधार के लिए प्रमाण दिए हैं। जैविक कारक, मस्तिष्क संरचना तथा तंत्रिका-रसायन व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तंत्रिका मनोविज्ञान यह अध्ययन करता है कि मस्तिष्क किस प्रकार से विशिष्ट मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं एवं व्यवहारवादी अनुवंशिकी से संबंध स्थापित करता है, यह हमारे व्यवहार का जैविकीय आधार पर अध्ययन करके मानव व्यक्तित्व की हमारी समझ को बढ़ाता है। वास्तव में, यमगाता इट अल (2006) ने संस्कृतियों से परे व्यक्तित्व विशेषकों के जैविक आधार के लिए प्रमाण प्राप्त किया है। वास्तव में, व्यक्ति में वंशाणुओं की अभिव्यक्ति में भी पर्यावरण भूमिका निभाता है क्योंकि वे इससे प्रभावित होते हैं। अतः व्यक्तित्व आनुवंशिक संरचना एवं व्यक्ति के पर्यावरण से संबंधित कारकों के बीच एक जटिल परस्पर संबंध है।

व्यक्तित्व में जैविकीय भिन्नताओं को उत्पन्न करने के लिए भी वंशाणु उत्तरदायी हैं। इन भिन्नताओं को स्वभाव (temperaments) कहा जाता है जो विशेष तरीकों से महसूस करने का कार्य करने की सामान्य आदतों से संबंधित होते हैं। ये व्यक्तित्व विशेषकों से ज्यादा

विस्तृत होते हैं तथा अधिक स्थायी होते हैं (रोदबर्ट, 2011) क्योंकि उनमें जैविकीय आधार होता है। बसु एवं प्लामिन (1984) के द्वारा बताई गई स्वभाव के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं - गतिविधि स्तर (activity level), भावावेश (emotionality) तथा सुजनता (sociability)।

1.4.1 व्यक्तित्व के पहलू

इस प्रकार, उपर्युक्त परिचर्चा से यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में शारीरिक, जैविक, मनोवैज्ञानिक के साथ-साथ सामाजिक पहलू शामिल हैं।

जैविक पहलुओं में शामिल हैं -

- व्यक्ति का शारीरिक आकार।
- शारीरिक प्रक्रियाएं एवं हार्मोन्स जो व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं।
- व्यक्ति का व्यक्तित्व को निर्धारित करने में व्यक्ति का स्वभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मनोवैज्ञानिक पहलुओं में शामिल हैं -

- व्यक्ति की अभिरुचि। इन अभिरुचियों को अर्जित किया जाता है और ये माता-पिता, साथी समूह तथा अन्य परिस्थितिय कारकों से प्रभावित हो सकते हैं।
- व्यक्ति की योग्यताओं का भी उसके व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है।
- व्यक्ति की सुजनता जो सामाजिक परिवेश में अन्य लोगों के साथ संबंध स्थापित करने एवं पारस्परिक क्रिया करने के संदर्भ में हैं।
- व्यक्ति की सांवेगिक विशेषताएं उसके व्यक्तित्व को निर्धारित करती हैं।
- ठेठ व्यवहारवादी प्रतिक्रियाएं।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को व्यक्तित्व विशेषक माने जाने के लिए इनमें निरंतरता का होना महत्वपूर्ण है।

स्व-आकलन प्रश्न 2

1) वैयक्तिक भिन्नताएं जब क्षणिक होती हैं, क्या इसे व्यक्तित्व का एक भाग माना जा सकता है? हाँ या नहीं।

2) अलपोर्ट के द्वारा दी गई व्यक्तित्व की परिभाषा का विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) स्वभाव (temperament) क्या है?

.....

.....

.....

4) अवस्था (state) एवं विशेषक (trait) के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

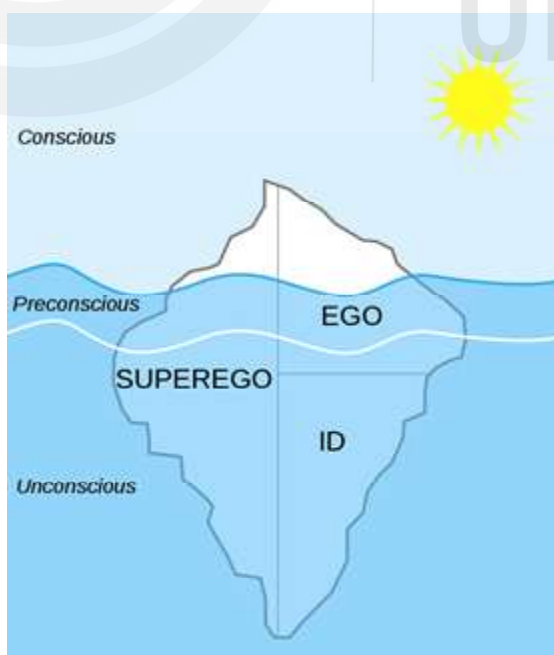
.....

1.5 व्यक्तित्व के सिद्धांत

व्यक्तित्व की व्याख्या करने में विशेषक उपागम सशक्त प्रतिमान रहा है। हालांकि, व्यक्तित्व को मनोविश्लेषक, व्यवहारवादी तथा मानवतावादी सिद्धांतों जैसी प्रमुख मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के दृष्टिकोण से भी व्याख्या की गई है तथा समझा गया है। अब हम व्यक्तित्व के अनेक सिद्धांतों के बारे में विचार करेंगे जिनमें व्यक्तित्व के समकालीन विशेषक सिद्धांत तथा व्यक्तित्व के जैविक सिद्धांत शामिल हैं।

1.5.1 व्यक्तित्व के मनोवेगीय सिद्धांत

व्यक्तित्व के मनोवेगीय सिद्धांत के प्रवर्तक फ्रायड थे। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्धारित करने में अचेतन अभिप्रेरणाओं, इच्छाओं तथा ताकत पर बल देता है। इसे गतिशील कहा जाता है क्योंकि इसमें सचेतन एवं अचेतन मनोवैज्ञानिक ताकतों के बीच सतत टकराव या संघर्ष होता है। फ्रायड के अनुसार, हमारा व्यवहार एवं व्यक्तित्व अचेतन आवश्यकताओं, स्मृतियों एवं अभिप्रेरणा के द्वारा निर्धारित होता है। हमारे व्यवहार में अंतर्निहित विचार, भावनाएं और इरादें ज्यादातर अचेतन होते हैं। फ्रायड अचेतन भाग को पानी के अंदर स्थित एक हिमशैल के बड़े हिस्से के रूप में प्रस्तुत करते हैं वहीं पानी के ऊपर स्थित छोटे हिस्से को सचेतन जागरूकता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अचेतन में वे मानसिक प्रक्रियाएं निहित होती हैं जो व्यक्ति के लिए आसानी से उपलब्ध नहीं होती हैं।



चित्र 1.1: फ्रायड का सिद्धांत

(स्रोत : commans-wikimedia.org)

जब व्यक्ति इन अचेतन ताकतों से संचालित होता है जिनके बारे में वह जागरूक नहीं है तब यह व्यक्तित्व की तीनों संरचनाओं **इड (id)**, **अहं (ego)** तथा **पराहम् (superego)** के बीच संघर्ष की तरफ ले जाता है। इस प्रकार से फ्रायड व्यक्तित्व की तीन आधारभूत / प्राथमिक संरचनाओं को प्रस्तावित करते हैं तथा इनके बीच पारस्परिक क्रिया व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रकृति निर्धारित करती है। 'इड' अचेतन स्तर पर रहता है जो अचेतन इच्छाओं से संबंधित है तथा सुखेप्सा (pleasure principle) सिद्धांत के द्वारा संचालित होता है जिसमें आप परिस्थितिय कारकों या सामाजिक मान्यताओं एवं नियमों को दरकिनार करते हुए अपनी इच्छाओं की तुरन्त पूरा या संतुष्ट करना चाहते हैं। 'पराहम्' नैतिक पक्ष से संबंधित है जो समाज की आचार संहिता के नियमों एवं मानदण्डों के द्वारा संचालित होता है। अभिभावकीय नियंत्रण एवं सामाजिक अपेक्षाएं पराहम् के विकास को प्रभावित करती हैं। यह नैतिकता के रक्षक के रूप में कार्य करता है और इड की अवांछनीय इच्छाओं को रोकता है। 'अहं' जो वास्तविकता के सिद्धांत (reality principle) पर कार्य करता है, यह इड की अवांछनीय इच्छाओं तथा पराहम् के नैतिक कथन के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करता है। यह तर्कयुक्त चिंतन एवं समस्या समाधान का इस्तेमाल करता है। इस प्रक्रिया में अहम् संघर्ष का सामना करने के लिए **रक्षा युक्तियों (defense mechanisms)** का प्रयोग करता है और संघर्ष के कारण उत्पन्न हुई चिन्ता को कम करता है। रक्षा युक्तियां मानसिक युक्तियां हैं जो व्यक्ति को इड एवं पराहम् के बीच संघर्ष में टूटने से बचाती हैं। ये अचेतन स्तर पर काम करती हैं। कुछ सामान्य रक्षा युक्तियों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं।

युक्तीकरण (rationalization): अपने व्यवहार के लिए स्पष्टीकरण या तर्कयुक्त कारण देना जिसे अनुचित या गलत माना गया हो, जैसे-परीक्षा में परीक्षक की संक्षिप्त अनुपस्थिति के दौरान विद्यार्थी द्वारा नकल करना क्योंकि अन्य विद्यार्थी भी नकल कर रहे थे।

अस्वीकरण (denial): तथ्य को स्वीकार करने से मना करना क्योंकि यह चिन्ता की तरफ ले जाएगा और संकट का कारण होगा, जैसे - माता पिता के द्वारा यह स्वीकार करने से इंकार करना कि उनका बच्चा कक्षा परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया है (क्योंकि यह उन पर बुरी तरह प्रतिबिंबित होगा)।

उदारीकरण (sublimation): अवांछनीय आवेगों को सामाजिक रूप से स्वीकार्य एवं संरचनात्मक व्यवहार में परिवर्तित करना, जैसे - आक्रामकता को फुटबाल या बागवानी आदि में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए लगाना।

प्रतिगमन (Regression): विकास की पूर्व अवस्था तथा उस अवस्था के व्यवहार एवं आदतों की विशेषता की तरफ वापस लौटना, जैसे - जब उसके माता-पिता उच्च शैक्षिक प्रदर्शन के लिए उसके ऊपर दबाव डालते हैं, तो किशोर बिस्तर गीला करना शुरू कर देता है।

दमन (repression): अपनी जानकारी से संकट एवं चिंता के स्रोत का दमन करना या हटाना जिससे यह सचेतन में उपलब्ध न रहे, जैसे - व्यक्ति बचपन की शोषण की घटनाओं को भूल जाता है।

प्रतिक्रिया निर्माण (reaction formation): स्वयं के बारे में एक अस्वीकार्य, असहज एवं संकटयुक्त विचार (जो कि वास्तविक है) को उसके विपरीत सोचकर अनदेखी करना, जैसे - कंजूस होने के विचार की अनदेखी करने के लिए अत्यधिक उदार बनना।

प्रक्षेपण (projection): अपने अस्वीकृत विचारों एवं गुणों को किसी अन्य पर प्रक्षेपित करना या जिम्मेदार ठहराना जैसे अपनी क्रोध भावना के लिए ट्रैफिक स्थिति या किसी अन्य को उत्तरदायी ठहराना।

विस्थापन (displacement): सांवेगिक प्रतिक्रिया को एक व्यक्ति/स्थिति से दूसरे पर प्रतिस्थापित करना जैसे कार्यस्थल में अधिकारी पर आए गुस्से को जीवनसाथी या बच्चे पर प्रकट करना।

फ्रायड ने इस बात पर बल दिया कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के अनुभव व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उसके अनुसार, व्यक्तित्व का विकास पाँच अवस्थाओं में घटित होता है जिसे उन्होंने 'विकास की मनोलैंगिक अवस्थाएँ' (psychosexual stages of development) कहा है जो बच्चों के द्वारा काम प्रवृत्ति की इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए उनकी अचेतन इच्छा द्वारा चिह्नित की जाती हैं। ये हैं - *मौखिक अवस्था* (जन्म से 18 महीने तक), *गुदीय अवस्था* (18 महीने से 3 वर्ष तक), *लिंगीय अवस्था* (3 से 6 वर्ष तक), *कामप्रसुप्ति अवस्था* (6 से 12 वर्ष तक) तथा *जननांगीय अवस्था* (12 से 20 वर्ष तक)। इनमें से प्रत्येक अवस्था में, बच्चे की खुशी का स्रोत मुँह, गुदा या जननेंद्रिय जैसे किसी एक वासनोत्तेजक क्षेत्र पर केंद्रित रहता है। मौखिक अवस्था में शिशु माँ का दूध पीकर अपनी भूख को शांत करते हैं, इसलिए वे मुख के साथ खुशी को संबंधित करते हैं। गुदा अवस्था में, उन्हें टॉयलेट के लिए प्रशिक्षित किया जाता है अतः उनका ध्यान गुदा पर रहता है। इसके बाद लिंगीय अवस्था आती है जिसमें बच्चे अपने जननेंद्रियों के बारे में उत्सुक हो जाते हैं। काम प्रसुप्ति अवस्था में, कामेच्छा को दबाया जाता है। अंततः जननांगीय अवस्था को लैंगिकता, शारीरिक संबंधों और प्रजनन के प्रति परिपक्व एवं स्वस्थ रुचि एवं अभिवृत्ति से चिह्नित किया जाता है। इन पाँच अवस्थाओं से व्यक्ति का आगे बढ़ना व्यक्तित्व के विकास को चिह्नित करता है। बच्चों को एक अवस्था से दूसरी अवस्था में सफलतापूर्वक बढ़ने की आवश्यकता होती है तथा किसी विशेष अवस्था में स्थिर नहीं होना होता है। माता-पिता के द्वारा बच्चों के पालन-पोषण के तरीकों एवं प्रयोग में लाई गई अनुशासनात्मक विधियों के द्वारा एक अवस्था में स्थिरण (fixation) हो सकता है। उदाहरणार्थ यदि अभिभावक सख्त टॉयलेट प्रशिक्षण अपनाते हैं तब यह बच्चे को उचित अनुशासन के प्रयोग के बजाय एक भिन्न तरीके से प्रभावित कर सकता है। इसी प्रकार से मौखिक अवस्था में अत्यधिक आसक्ति उसी अवस्था पर बच्चे का स्थिरण हो जाता है; और बच्चा एक वयस्क के रूप में मुख के द्वारा प्रसन्नता पाने के प्रति तलाश में रहता है जैसे कि धूम्रपान। इस प्रकार, बच्चा इन मनोलैंगिक अवस्थाओं से कैसे आगे बढ़ता है, वह एक परिपक्व वयस्क व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करता है।

फ्रायड के सिद्धांत की बहुत आलोचना की गई है, विशेष रूप से कामुक इच्छाओं के प्रति बल देने के कारण। हालांकि, फ्रायड का प्रभाव लाभदायक रहा है और नव-फ्रायडिक के रूप में सामने आया है जिन्होंने फ्रायड के सिद्धांत के कुछ पहलुओं को अस्वीकार करते हुए अचेतन ताकतों की अवधारणा को स्वीकार किया है तथा स्व और सामाजिक पारस्परिक क्रियाओं जैसे बहुत से अन्य प्रभावों को ध्यान में लाए हैं।

1.5.2 व्यवहारवादी एवं संज्ञानात्मक सिद्धांत

फ्रायड का आन्तरिक प्रक्रियाओं पर बल देना, स्किनर (skinner) जैसे व्यवहारवादियों के द्वारा आलोचना की गई है जिन्होंने व्यवहार को प्रबलन (reinforcement) के द्वारा सीखी गई अनुक्रिया (learned response) के रूप में देखे जाने पर ध्यान दिया है। इस प्रकार व्यवहारवादियों ने प्रस्ताव दिया कि व्यक्तित्व अधिगम के द्वारा प्रभावित होता है तथा अधिगम, प्रबलन के तरीकों के द्वारा घटित होता है। स्किनर के क्रियाप्रसूत अनुबंधन सिद्धांत (operant conditioning theory) के अनुसार, व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार के प्रबलित परिणामों के द्वारा प्रभावित होता है। वे क्रियाप्रसूत व्यवहार बनाम प्रतिवादी व्यवहार (operant vs respondent behaviour) के बारे में बात करते हैं। वह व्यवहार जो पर्यावरण

में उद्दीपन के द्वारा उत्पन्न होता है उसे प्रतिवादी व्यवहार कहा जाता है। ये अनायास है तथा व्यवहार एक विशेष उद्दीपक की प्रतिक्रिया में स्वतः घटित होता है। हालांकि, क्रियाप्रसूत व्यवहार/अनुक्रियाएं परिवेश पर कार्य करती हैं जो परिवेश में परिवर्तन का कारण बनता है। इन परिवर्तनों का एक विशेष उद्दीपक के संदर्भ में व्यक्ति के भावी अनुक्रियाओं पर प्रबलित परिणाम होते हैं। इस प्रकार, क्रियाप्रसूत व्यवहार को सहायक व्यवहार के रूप में भी जाना जाता है। यह सायास है। क्रियाप्रसूत व्यवहार में प्रबलन अनुक्रिया के साथ संबंधित होता है, उद्दीपक के साथ नहीं।

स्किकनर के अनुसार, हमारा व्यवहार प्रबलन के द्वारा निर्धारित होता है। उसने व्यवहार एवं व्यक्तित्व को प्रभावित करने के लिए क्रमिक समीपता या निर्धारण (method of successive approximations or shaping) की विधि प्रस्तावित किया है। इसमें क्रमिक चरणों में वांछनीय व्यवहार को पुरस्कृत करने के बारे में कहा गया है, संबंधित व्यवहार के साथ पहले शुरू करते हुए फिर धीरे-धीरे वास्तविक व्यवहार की तरफ बढ़ना है। अब हम संक्षेप में स्किकनर की द्वारा दिए गए प्रबलन के प्रकार एवं प्रबलन की सूची पर परिचर्चा करते हैं। प्रबलन एक उद्दीपन है जो विशेष अनुक्रिया/व्यवहार की ताकत में वृद्धि करता है जब इसे उस अनुक्रिया के घटित होने के पश्चात् दिया जाता है। प्रबलक सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है। **सकारात्मक प्रबलन** (positive reinforcement) वह है जब आप कुछ रुचिकर या वांछनीय जोड़ते हैं, जैसे - जब आप वाद-विवाद प्रतियोगिता जीतने के पश्चात् मेडल या धनराशि इनाम में पाते हैं तब यह आपके लिए प्रबलन का कार्य करता है। **नकारात्मक प्रबलन** (negative reinforcement) वह है जब आप कुछ अरुचिकर एवं अवांछनीय चीजों को हटाते हैं, जैसे - सोनू अपनी माता जी से सहमत हो गया कि वह कूड़ा इकट्ठा करने के लिए आने वाले व्यक्ति को हफ्ते में तीन बार कूड़ा देगा, तब वह मोबाइल पर गेम खेल सकता है (मोबाइल पर गेम खेलने का प्रतिबंध हटाना)।

स्किकनर की **प्रबलन सूची** (reinforcement schedule) सविराम प्रबलन पर आधारित है जो एक व्यक्ति के द्वारा एक विशेष व्यवहार को प्रदर्शित करने पर प्रत्येक बार प्रबलन न देने से संबंधित है। उदाहरणार्थ - स्किकनर के प्रयोग में चूहे ने जब चूहेदानी का बार दबाया तो उसे प्रत्येक बार प्रबलन नहीं मिला, (जिसे स्किकनर बाक्स कहा गया), तब इसे सविराम प्रबलन (intermittent reinforcement) कहा गया। वहीं पर सतत प्रबलन (continuous reinforcement) प्रत्येक बार अनुक्रिया दिखाने पर प्रबलन प्राप्त करने से संबंधित है। सविराम प्रबलन को आगे चार प्रकार में बांटा गया : निश्चित अनुपात, निश्चित अन्तराल, परिवर्तनशील अनुपात तथा परिवर्तनशील अन्तराल सूची। अनुपात (ratio) अनुक्रियाओं की संख्या से संबंधित है और अन्तराल (interval) समय अवधि से संबंधित है। इस प्रकार, निश्चित अनुपात में अनुक्रियाओं की एक निश्चित संख्या के पश्चात् प्रबलन देना निहित है जो प्रत्येक तीसरी या पाँचवी अनुक्रिया के बाद हो सकता है। निश्चित अन्तराल संकेत देता है कि प्रबलन निश्चित समय अवधि के पश्चात् दिया जाता है जो प्रत्येक पाँच मिनट के पश्चात् हो सकता है। परिवर्तनशील अनुपात तथा परिवर्तनशील अन्तराल में प्रतिक्रियाओं की संख्या एवं समय अवधि जिसके पश्चात् प्रबलन दिया जाता है, लगातार स्थिर नहीं रहते हैं। यह बदलता रहता है, जैसे आप तीसरी प्रतिक्रिया के पश्चात् प्रबलन प्राप्त कर सकते हो, उसके पश्चात् दूसरी प्रतिक्रिया के बाद, फिर अगला सातवीं प्रतिक्रिया के बाद और इसी तरह चलता रहता है। प्रबलन की परिवर्तनशील सूची का हमारे व्यवहार पर अधिक प्रभाव होता है।

अधिगम सिद्धांत व्यक्तित्व की अपनी व्याख्या में सीमित थे और धीरे-धीरे व्यक्तित्व को समझने में सामाजिक संदर्भ एवं संज्ञान की भूमिका पहचानी गई।

बन्दुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत ने मत दिया कि सामाजिक परिस्थिति में अवलोकन एवं अनुकरण हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है और हमारे व्यक्तित्व को निर्धारित करने में प्रभाव डालता है। पहले अधिगम सिद्धांत अधिगम नियमों के संदर्भ में व्यवहार की व्याख्या करते समय सामाजिक संदर्भ पर ध्यान नहीं देते थे। बन्दुरा की सामाजिक अधिगम एवं व्यक्तित्व विकास की पुस्तक (बन्दुरा एवं वाल्टर्स, 1963) तथा अन्य पुस्तकों ने परिवेश के साथ व्यक्ति की पारस्परिक क्रिया पर ध्यान केंद्रित किया। बाद में, बन्दुरा ने अपने सामाजिक अधिगम सिद्धांत को सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत नाम दिया ताकि व्यक्तित्व के निर्धारण में मानव संज्ञान की भूमिका पर बल दिया जा सके। अन्य लोगों का व्यवहार, सामाजिक संदर्भ, पर्यावरण कारक तथा व्यक्ति की अपनी विचार प्रक्रियाएं सभी साथ-साथ पारस्परिक क्रिया करती हैं। इस प्रकार, विभिन्न कारकों के बीच पारस्परिक निर्धारण होता है जो कारण-कार्य संबंध के स्तर में तथा सशक्त पक्ष में भिन्न हो सकता है।

बन्दुरा का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत डायग्राम जैसा कि P-B-E [Person (व्यक्ति), Behaviour (व्यवहार), Environment (परिवेश)] का संकेत देता है, नीचे चित्र 1bF में दिया गया है। डायग्राम प्रदर्शित करता है कि व्यक्ति से संबंधित कारकों, परिवेश तथा व्यवहार के बीच दो तरफा या पारस्परिक क्रिया होती है, जो व्यवहार को प्रभावित करती है तथा व्यक्तित्व को निर्धारित करती है। कभी-कभी पर्यावरणीय कारक व्यक्तित्व को निर्धारित करने में अधिक महत्वपूर्ण होते हैं जबकि अन्य समय पर, व्यक्ति से संबंधित व्यक्ति के संज्ञानात्मक कारक अधिक प्रभावी कारक हो सकते हैं।



चित्र 1.2: बँन्दुरा का पारस्परिक निर्धारणवाद (Bandura's Reciprocal Determinism)

अन्य मनोवैज्ञानिकों ने भी संज्ञानात्मक कारकों के संदर्भ में व्यक्तित्व की व्याख्या की है। रोट्टर (1954) 'नियंत्रण का ठिकाना' (locus of control) की अवधारणा का प्रस्ताव किया है जो लोगों के द्वारा माने गए इस पूर्वानुमान से संबंधित है कि क्या अपने जीवन में उनका परिस्थितियों/घटनाओं पर नियंत्रण है या नहीं। जब वे पूर्वानुमान लगाते हैं कि उनकी प्रतिक्रियाएं एवं कार्य, परिणाम को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकते हैं तब उनका इस पर नियंत्रण होता है - इसे नियंत्रण का आंतरिक ठिकाना (internal locus of control) कहा जाता है। नियंत्रण का बाहरी ठिकाना (external locus of control) पूर्वानुमान लगाता है कि नियंत्रण व्यक्ति के बाहर की तरफ है तथा अन्य व्यक्तियों/परिस्थिति/भाग्य/

प्रारब्ध आदि में निहित है। रोटर ने आगे कहा कि नियंत्रण का आंतरिक या बाह्य ठिकाना व्यक्ति के प्रबलन के लिए 'आशाएं' तथा वह विशेष प्रबलकों को क्या मूल्य देता है, इस पर निर्भर करता है। इस प्रकार, यदि आप अपेक्षा करते हैं कि अध्ययन आपको अच्छे ग्रेड की तरफ ले जाएगा और आप अच्छे ग्रेड पाने को अहमियत देते हैं तब आप अध्ययन में अधिक समय देंगे और कठिन परिश्रम करेंगे जो नियंत्रण के आंतरिक ठिकाने का संकेत देता है।

इससे अतिरिक्त, संज्ञानात्मक सिद्धांतवादी इस पर जोर देते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तिगत मान्यताएं, आत्म प्रभावकारिता तथा सामाजिक परिस्थितियों के व्याख्या से प्रभावित होता है।

वाल्टर मिशेल एवं षोडा (Walter Mischel & Shoda) (1995) का CAPS (Cognitive-Affective Personality System) माडल भी व्यक्ति के व्यवहार पर संज्ञानात्मक-भावात्मक प्रभावों को प्रदर्शित करता है। वे बताते हैं कि हमारा व्यवहार तथा इसके फलस्वरूप हमारा व्यक्तित्व चार चीजों से प्रभावित होता है : परिस्थिति की अनुभूति, परिस्थिति के प्रति भावात्मक या संवेगात्मक अनुक्रिया, परिस्थिति का सामना करने के लिए व्यक्ति का कौशल तथा उनके व्यवहार के परिणाम का पूर्वानुमान लगाना।

स्व आकलन प्रश्न 3

1) फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व की तीन आधारभूत संरचनाएं क्या हैं?

.....
.....
.....
.....

2) सविराम प्रबलन सूची के चार प्रकारों के नाम लिखिए।

.....
.....
.....

3) सामाजिक अधिगम सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....

4) नियंत्रण का बाहरी ठिकाना क्या है?

.....
.....
.....
.....

1.5.3 मानवतावादी सिद्धांत

व्यक्तित्व के मानवतावादी दृष्टिकोणों ने व्यक्तित्व के निर्धारणात्मक दृष्टिकोण का विरोध या खंडन किया है, जिसमें यह स्वीकार किया गया है कि व्यक्तित्व प्रबलन तरीकों तथा अचेतन के प्रभाव से निर्धारित होता है जहां पर यह दोनों ही व्यक्ति के नियंत्रण में नहीं होते हैं। मानवतावादी सिद्धांतकार विश्वास करते हैं कि मानव मूलरूप में अच्छे होते हैं। वे स्व-समझ पर अधिक ध्यान देते हैं तथा आत्म-सिद्धि (self actualization) के लिए प्रयास करते हैं। मैस्लो का आवश्यकताओं का क्रम आत्म-सिद्धि को सर्वोच्च प्रेरणा के रूप में रखता है। यह आधारभूत शारीरिक आवश्यकताओं से शुरू होकर मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की तरफ बढ़ता है और अंत में व्यक्ति की संभावनाओं की पूर्णता के उद्देश्य पर आधारित होता है।



चित्र 1.3: मैस्लो का आवश्यकताओं का क्रम

पहले निचले क्रम के आवश्यकताओं को पूरा करना होता है, तभी व्यक्ति बड़े क्रम में स्थित आवश्यकताओं को पूरा करने की तरफ बढ़ता है। इस प्रकार, सर्वप्रथम खाने, सोने आदि मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना होता है, उसके पश्चात् ही व्यक्ति संरक्षा एवं सुरक्षा के बारे में सोचता है। मूलभूत जैविक आवश्यकताओं के सामने अन्य सभी आवश्यकताएं गौण हो जाती हैं। हालांकि ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ पर मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी न होने पर भी व्यक्ति उच्च क्रम की आवश्यकताओं पर ध्यान देता है।

पहले चार स्तरों को कमी या अभाव (deprivation) की आवश्यकताएं (D-needs) कहते हैं। यदि ये आवश्यकताएं पूरी नहीं होती हैं तो कमी या अभाव उत्पन्न होता है और व्यक्ति इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेरित होता है। आवश्यकताओं के अंतिम स्तर को

अस्तित्व (being) आवश्यकताएँ (B-needs) कहते हैं। यह D- आवश्यकताओं की कमी की प्रेरणा की तुलना में वृद्धि संबंधी प्रेरणा पर कार्य करती है। मेस्लो न समस्थिति सिद्धांत का प्रयोग करके D आवश्यकताओं को समझाया है, समस्थिति (homeostasis) वह सिद्धांत है जिसके द्वारा शारीरिक व्यवस्था कार्य करती है। एक थर्मोस्टेट की तरह, जब अत्यधिक सर्दी होती है तब यह गरम करता है और जब अत्यधिक गर्मी होती है तब स्विच बंद कर देता है। जब व्यक्ति के पास किसी वस्तु की कमी होती है तो वे इसे पाना चाहते हैं और जब इसे प्राप्त कर लेते हैं तब वे अगली वस्तु की तरफ बढ़ते हैं। यदि आपने बचपन में उपेक्षा या शोषण का अनुभव किया है तो आपको प्यार, देखभाल एवं सुरक्षा की आवश्यकता जारी रहती है, जब तक कि यह पूरा नहीं होता है और यह आपके व्यवहार एवं व्यक्तित्व में विशेषित हो सकती है।

मानवतावादी सिद्धांतकार व्यक्ति एवं उनकी उन्नति तथा विकास, संभावना में वृद्धि, कुशल क्षेम तथा व्यक्ति के जीवन की विशेषता पर ध्यान देते हैं। इस प्रकार, व्यक्ति की व्यक्तिगत कुशल क्षेम, उन्नति, खुलापन, अनुभव, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, व्यक्ति द्वारा ग्रहण की गई वास्तविकता की चर्चा यहाँ की जाती है। मानवतावादी वैज्ञानिकों ने मानव व्यवहार के नकारात्मक पक्ष की तरफ से ध्यान बंटाय़ा है, जैसे मानसिक बीमारी के बजाय मानव व्यवहार के सकारात्मक पक्ष एक अच्छे जीवन की संभावनाओं पर, अंतर्निहित अच्छाई तथा सर्वोत्तम मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना। सकारात्मक मनोविज्ञान जो कि अब मनोविज्ञान में एक प्रमुख क्षेत्र है, की जड़ें मानवतावादी सिद्धांतों में तलाशी जा सकती हैं। पिछले दो दशकों में यह बहुत तेजी से विकसित हुआ है जब मार्टिन सेलिगमैन ने इसे 1998 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ के थीम के रूप में इसे घोषित करके लोकप्रिय बना दिया।

मैस्लो ने व्यक्ति, जीवन की सार्थकता तथा आत्म-सिद्धि पर ध्यान देकर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालांकि, उनके सिद्धांत की इस आधार पर आलोचना भी की गई कि सृजनात्मक और महान लोगों के ऐसे उदाहरण देखे गए हैं जिन्होंने निर्धनता या अभाव या बीमारी के बावजूद अपनी संभावनाओं का पूर्ण दोहन किया है। इस प्रकार, ये आवश्यकताएँ स्वभाव में ओवरलैपिंग के रूप में देखी जा सकती हैं। इसके आगे, मैस्लो ने बाद के वर्षों में एक अन्य आयाम आत्म-सिद्धि से परे जाकर श्रेष्ठता (transcendence)“ जोड़ा (मैस्लो, 1996; कोलको-राइवेरा 2006)। यह अनंत पर पहुँचने के प्रयास में परोपकारिता एवं अध्यात्मिकता से संबंधित है। मैस्लो (1971, पृ. 269) के अनुसार, “ट्रान्सेंडेंस मानव सचेतनता के उच्चतर तथा सर्वाधिक समावेशी या समग्र स्तरों से संबंधित है, जो स्वयं, अन्य के लिए महत्वपूर्ण, सामान्य रूप में सभी व्यक्तियों के लिए, अन्य प्रजातियों के लिए प्रकृति के लिए तथा ब्रह्मांड के लिए साधन के बजाय साध्य के रूप में व्यवहार करती है एवं संबंधित हैं”।

एक अन्य मानवतावादी सिद्धांतकार कार्ल रोजर्स ने सकारात्मक व्यक्तित्व के विकास के लिए अभिभावकों द्वारा बच्चों को बिना शर्त प्यार करने की आवश्यकता पर जोर दिया है। जब बच्चा बिना किसी शर्त के स्वीकार किया जाता है तो वह एक पूर्णतः प्रकार्यशील व्यक्ति (fully functioning person) के रूप में विकसित होगा तथा एक स्वस्थ व्यक्तित्व का विकास होगा। रोजर्स की दो प्रसिद्ध पुस्तकें हैं - On Becoming a Person (1961) तथा Person to Person (1967)। यह सिद्धांत व्यक्ति एवं आत्म के बारे में उनकी वस्तुनिष्ठ समझ पर ध्यान केंद्रित करता है। रोजर्स के द्वारा विकसित सेवार्थी केंद्रित थैरेपी की तीन विशिष्ट विशेषताएँ हैं - अशर्त सकारात्मक आदर (unconditional positive regard), वास्तविकता (genuineness) तथा तदानुभूति (empathy)। यह स्व-सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है तथा यह व्यक्ति, उनके अनुभवों, भावनाओं, मूल्यों एवं आस्थाओं पर ध्यान

केंद्रित करता है और इस प्रकार घटना क्रिया उपागम (phenomenological approach) का अनुसरण कर रहा है।

आत्म-संप्रत्यय या आत्म-धारणा (self-concept) रोजर्स के सिद्धांत का केंद्रीय तत्व है। उसने आत्म को संघटित, सतत, 'मैं' या 'मुझे' की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्यों के सम्प्रत्ययात्मक समूहों से बना, जीवन के अनेक पहलुओं के साथ पारस्परिक क्रिया में 'मैं' या 'मुझे' के संबंध का परिप्रेक्ष्य तथा उन परिप्रेक्ष्यों से जुड़े हुए मूल्यों के साथ परिभाषित करते हैं। इस प्रकार, आत्म अन्य लोगों के साथ पारस्परिक क्रिया के द्वारा विकसित होता है तथा इसके फलस्वरूप सामाजिक मूल्यांकन आत्म अवधारणा के विकास को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

रोजर्स व्यक्तित्व के संबंध में वास्तविक आत्म तथा आदर्श आत्म एवं जिस सीमा तक इन दोनों में अनुरूपता है, उस के बारे में बात करते हैं। वास्तविक आत्म जो आप वर्तमान में, वास्तव में हैं तथा आत्म-सिद्धि के द्वारा आप जो बन सकते हैं, उससे संबंधित होता है। आदर्श आत्म आप आदर्श रूप में क्या होना चाहते हैं, उससे संबंधित होता है। यह समाज की अपेक्षाओं एवं मांगों को प्रदर्शित करता है कि आपको क्या होना चाहिए। दोनों में अनुरूपता (Congruence) एक स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण करेगा। हालांकि, चूंकि पूर्णयता सही अनुरूपता संभव नहीं हो सकती है अतः अनुरूपता का सापेक्ष स्तर महत्वपूर्ण है। एक लड़के के रूप में, यदि आपने यह आत्म-धारणा विकसित की है कि लड़के नहीं रोते हैं तब ऐसी परिस्थितियों में आप कठिनाई अनुभव करेंगे जहाँ आप महसूस करते हैं कि आपको रोना है, जैसे अपने माता-पिता की मृत्यु के समय। यदि हमारे आत्म एवं हमारे अनुभवों के बीच विसंगति अधिक है तो यह कुसमायोजन की तरफ जाता है तथा अंत में व्यक्तित्व को असंघटन एवं मानसिक बीमारी की तरफ ले जा सकता है।

इस प्रकार मानवतावादी सिद्धांत व्यक्ति को एक समग्र के रूप में जोर देते हैं, व्यक्ति को समग्र रूप से समझते हुए, पूर्ण संभावना तथा कार्य प्रणाली को एक समग्र के रूप में समझने पर ध्यान देते हुए उनके समेकित व्यक्तित्व अनुभव का विवरण रखते हैं। यह एक स्वस्थ और अच्छी तरह से समायोजित व्यक्तित्व के लिए आत्म का विकास तथा अनुभवों के साथ आत्म की अनुरूपता के उपर ध्यान केंद्रित करता है।

1.5.4 व्यक्तित्व के विशेषक सिद्धांत

विशेषक उपागमों के पहले के सिद्धांतों में, विशेष रूप से मनोवेगीय सिद्धांत में आंतरिक अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं, प्रारंभिक बाल्यावस्था के अनुभवों, अभिभावकों के साथ बच्चों के सांवेगिक लगाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। अधिगम सिद्धांतों में व्यवहारवादी संभावना पर जोर दिया गया, वहीं पर सामाजिक अधिगम सिद्धांतों ने प्रस्तावित किया कि व्यक्तित्व आस्थाएँ, अपेक्षाएँ, मूल्य एवं सामाजिक संदर्भ व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। मानवतावादी सिद्धांतों ने अंतर्निहित अच्छाई, स्व-समझ, वस्तुनिष्ठ अनुभव, व्यक्तित्व उन्नति तथा संभावना को पूरा करने के बारे में बताया।

इन सिद्धांतों की तुलना में, विशेषक सिद्धांतों में व्यक्तित्व को भिन्न विशेषकों के संदर्भ में बताया गया है जो विचार, संवेग एवं व्यवहार के तरीके या स्वभाव से संबंधित हैं। इस प्रकार, लोग अपने व्यक्तित्व की प्रकृति में भिन्न होते हैं। विभिन्न स्थिति तथा समय की सीमा पर विशेषक (शीलगुण) अपेक्षाकृत स्थिर और संगत होते हैं। विशेषक उपागम प्रदर्शित करते हैं कि किस प्रकार से व्यक्ति अनेक विशेषकों में भिन्न होते हैं, जैसे - आप बहुत मिलनसार हो सकते हैं, जबकि आपकी बहन शर्मीली है। आपका घनिष्ठ मित्र हमेशा चिंतित

हो सकता है जबकि आप शांत हैं। विशेषक एक सातव्य पर एक चरम से दूसरे तक भिन्न होते हैं। हालांकि, अधिकतर लोग विशेषक के सातव्य के बीच में आते हैं। आलपोर्ट विशेषकों को व्यक्तित्व को समझने में मुख्य मानता है। उसने एक व्यक्ति के व्यक्तित्व में उनकी व्यापकता के स्तर पर निर्भर करते हुए विशेषकों को प्रमुख, केंद्रीय एवं गौण विशेषक (cardinal, central and secondary traits) के रूप में तीन समूहों में विभाजित किया। प्रमुख विशेषक अन्य विशेषकों को शामिल करते हुए सर्वाधिक व्यापक हैं। प्रमुख विशेषकों द्वारा एक व्यक्ति के व्यवहार एवं व्यक्तित्व के कई पहलुओं की व्याख्या की जा सकती है। केंद्रीय विशेषक प्रमुख विशेषकों की तुलना में कम व्यापक होते हैं परन्तु, फिर भी व्यक्ति के सामान्यीकृत व्यवहारों से संबंधित होते हैं। व्यक्ति में इन विशेषकों का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन किया जा सकता है। गौण विशेषक कम सामान्यीकृत होते हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से या सभी के द्वारा इनका अवलोकन नहीं किया जा सकता है। जब हम किसी व्यक्ति को जानते हैं तथा घनिष्ठ स्तर पर बार-बार पारस्परिक क्रिया करते हैं तब हम उसके गौण विशेषकों से परिचित हो जाते हैं जैसे - व्यक्ति की अभिरुचियों, खाने की आदतें, आदि।

आलपोर्ट एवं ऑडबर्ट (1936) ने शुरुआत में शब्दकोश से करीब 18000 शब्दों की एक सूची तैयार की है जिसे व्यक्तित्व विशेषकों के रूप में वर्णित किया जा सकता था। बाद में, कैटेल (1965) ने इन शब्दों को समूहों में करके कम कर दिया और फिर एक सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया जिसे कारक विश्लेषण (factor analysis) कहते हैं और अंत में 16 व्यक्तित्व कारक रहे। ये कारक हैं - गर्मजोशी (warmth), तर्कशक्ति (reasoning), सांवेगिक स्थायित्व (emotional stability), प्रबलता (dominance), जिंदादिली (liveliness), नियम के प्रति सचेतनता (rule consciousness), सामाजिक दंबगता (social boldness), संवेदनशीलता (sensitivity), सतर्क (vigilance), अमूर्तता (abstractness), एकांतता (privateness), अवबोधन (apprehension), परिवर्तन के प्रति खुलापन (openness to change), आत्म विश्वास (self reliance), पूर्णतावाद (perfectionism) एवं तनाव (tension)। उसने इन्हें मूल विशेषक (source traits) कहा जो अन्तर्निहित आधारभूत कारकों से संबंधित हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में बता सकते हैं। सतही विशेषकों जिनका बाहर से अवलोकन किया जा सकता है की तुलना में मूल विशेषक गहन स्तर पर अस्तित्व में रहते हैं। एक सतही या पृष्ठ विशेषक (source traits) में व्यवहारवादी विशेषताओं का समूह शामिल होता है जो साथ में विशेष विशेषक के बारे में बताता है, जैसे - बहिर्मुखता को निश्चित विशेषताओं जैसे मैत्री, सामाजिक रूप से घुलने-मिलने, खुलापन आदि के साथ बताया जाता है।

कैटेल ने प्रस्ताव किया है कि व्यक्तित्व व्यक्ति एवं परिस्थिति के बीच एक क्रिया है। विशेषक परिस्थितीय कारकों के साथ पारस्परिक क्रिया करते हैं तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। वे इसे सूत्र : $R = f(S, P)$ के साथ संबंधित करते हैं जिसमें R व्यक्ति की अनुक्रिया (response) से संबंधित होता है, F क्रिया (function) है, S उद्दीपन परिस्थिति (stimulus situation) है तथा P व्यक्ति की व्यक्तित्व संरचना (personality structure) है। इसके आगे, कैटेल ने व्यक्तित्व विशेषकों के विकास में आनुवंशिकी एवं परिवेश के सापेक्ष योगदान के बारे में विचार किया है। इसके चलते उन्होंने मूल विशेषकों को स्वाभाविक विशेषकों (constitutional traits), जो व्यक्ति के जैविक एवं शारीरिक अवस्थाओं से लिए गये हैं तथा परिवेशी व्यवहार विशेषकों (environmental-mold traits) जो व्यक्ति के शारीरिक एवं सामाजिक परिवेश से प्रभावित होते हैं, के रूप में श्रेणीबद्ध किया है।

1.5.4.1 पंच कारक सिद्धांत

बाद में, (मैक्रे एंड कोस्टा, 1999) ने एक अन्य प्रमुख सिद्धांत पंच कारक सिद्धांत या वृहत् पांच सिद्धांत, पाँच आधारभूत व्यक्तित्व विशेषकों पर ध्यान केंद्रित किया जिसे संक्षिप्त रूप

में OCEAN के रूप में जाना जाता है - (खुलापन (openness), कर्तव्यनिष्ठा (conscientiousness), बहिर्मुखता (extraversion), सहमतता (agreeableness), मनोविक्षुब्धता (neuroticism)। खुलापन में बुद्धि, कल्पना, अर्न्तदृष्टि, कलात्मक तथा सृजनात्मक से संबंधित विशेषक शामिल हैं। कर्तव्यनिष्ठा में सचेत, वैचारिक तथा संगठित रहना शामिल है। इसमें विस्तृत रूप से ध्यान देना, योजना बनाना, लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार तथा आवेग नियंत्रण शामिल है। बहिर्मुखता में सामाजिकता, उत्साही, शक्तिशाली, मिलनसार तथा निश्चयात्मक रहना शामिल हैं। इसमें सांवेगिक अभिव्यक्ति अधिक होती है। सहमतता विश्वसनीयता, मददगार, दया, स्नेह, सामाजिक सहमति एवं परोपकारी व्यवहार से संबंधित है। मनोविक्षुब्धता चिंता, मनोदशा तथा चिड़चिड़ापन जैसे विशेषकों से संबंधित है। इसमें सांवेगिक स्थायित्व की कमी होती है। इस प्रकार, इन पाँचों विशेषकों में से प्रत्येक उच्चतर-क्रम विशेषक हैं जो कई अंतर-संबंधित निम्न-क्रम विशेषकों का समाहित करते हैं। (चित्र 1.4 देखें)



चित्र 1.4 : व्यक्तित्व के पंच बड़े सिद्धांत

पंच कारक सिद्धांत के अनुसार, व्यक्तित्व विशेषक व्यक्ति की आधारभूत प्रवृत्तियों को परिलक्षित करते हैं तथा इस प्रकार, व्यक्तित्व का एक आनुवंशिक या जैविक आधार प्रदर्शित करते हैं। पर्यावरणीय कारकों के साथ इन आधारभूत प्रवृत्तियों की पारस्परिक क्रिया हमारे व्यक्तित्व के विकास को प्रभावित करती है। वृहत् पांच सिद्धांत का विस्तृत रूप से संस्कृतियों से परे अध्ययन किया गया है और व्यवहार के विस्तृत दायरे का अनुमान लगाने में इसकी प्रभावोत्पादकता का प्रमाण पाया गया है (पौनोनेन एंड एष्टन, 2001; हेलेट, वाटसन एंड इलिस, 2004)।

1.5.4.2 जैविक विशेषक सिद्धांत

आइसेक (1967) ने जैविक विशेषक सिद्धांत का प्रस्ताव किया जो हमारे व्यक्तित्व के लिए जैविक आधार पर अत्यधिक बल देता है। उसका सिद्धांत अनुमोदित करता है कि व्यक्तित्व में तीन आयाम या उत्कृष्ट विशेषक निहित है जिन्हें प्ररूप भी कहते हैं जो कैटेल के द्वारा दिए गए 16 विशेषकों की तुलना में व्यक्तित्व की व्याख्या कर सकता है। ये विशेषक हैं - अंतर्मुखी-बहिर्मुखी, सांवेगिक स्थायित्व-मनोविक्षुब्धता तथा निम्न अवरोध-उच्च अवरोध (चित्र 1 eF को देखें)। अंतिम आयाम को पहले मनोविक्षुब्धता के रूप में जाना जाता था।

हालांकि, इस शब्द को पुनः नाम दिया गया चूंकि मनोविक्षिप्तता का अर्थ एक रोग है जो कि आइसेक का अभिप्राय नहीं था। जब आइसेक प्ररूपों के बारे में बात करते हैं तो उनका मतलब अलगाव से नहीं है। बल्कि, ये तीनों आयाम/विशेषक एक चरमसीमा से दूसरी चरमसीमा तक फैले होते हैं। अंतर्मुखी शर्मीला एवं प्रतिबंधित होने से संबंधित होता है जबकि बहिर्मुखी व्यक्ति की सामाजिकता तथा मिलनासार स्वभाव से संबंधित होता है। यह विशेषक पाँच बड़े सिद्धांत के बहिर्मुखी विशेषक के समान है। सांवेगिक स्थायित्व व्यक्ति की मनोदशा तथा संवेगों की निरन्तरता से संबंधित है। दूसरी तरफ मनोविक्षुब्धता आयाम जो पाँच बड़े सिद्धांत में भी है, अधिक सांवेगिक, तनावयुक्त, चिंतायुक्त तथा उदासीन होने से संबंधित है। अवरोधक विशेषक आवेगों को नियंत्रित करने की योग्यता से संबंधित होते हैं तथा ये पाँच वृहत् सिद्धांत के कर्तव्यनिष्ठा के समान हैं। चित्र 1eF में, अवरोधक विशेषक निम्न अवरोधक/उच्च मनोविक्षिप्तता (मनोविक्षुब्धता - बहिर्मुखी - खंड) से उच्च अवरोधक/निम्न मनोविक्षिप्तता (अंतर्मुखी - सांवेगिक रूप से स्थायी खंड) तक फैलता है।

मनोविक्षुब्धता से ग्रस्त (असंतुलित)



सांवेगिक रूप से संतुलित

चित्र 1.5: आइसेक का व्यक्तित्व विशेषक सिद्धांत

आइसेक के अनुसार, अंतर्मुखता या बहिर्मुखता जैसे व्यक्तित्व विशेषक जैविक प्रक्रियाओं के द्वारा प्रभावित होते हैं। उदाहरणार्थ, उत्तेजना जो कि जालीय सक्रिय प्रणाली से संचालित होता है, बहिर्मुखता तथा अंतर्मुखता के बीच अंतर को सूचित करता है। उत्तेजना उत्तेजित होने के स्तरों से संबंधित है जो निम्न स्तर की उत्तेजना (नींद) से उच्च स्तर की उत्तेजना

(घबरा जाना) तक फैली है। प्रत्येक व्यक्ति की उत्तेजना का एक इष्टतम स्तर (optimal level) होता है जो प्रभावी ढंग से कार्य करने में उसकी मदद करता है। अंतर्मुखी व्यक्तियों का उत्तेजना स्तर उच्च होता है इसलिए वे किसी उद्दीपक के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। वे उन परिस्थितियों/उद्दीपकों का नजरअंदाज करते हैं जो आगे चलकर उत्तेजना उत्पन्न करेंगे तथा उन्हें वष में करेंगे। उदाहरणार्थ - एक साक्षात्कार का सामना करना, सभा में बोलना आदि। क्योंकि वे सामान्य रूप से अपने उत्तेजक स्तर से ऊपर कार्य करते हैं, अतः वे किसी अतिरिक्त उत्तेजक को पसंद नहीं करते हैं। वे कुछ ही उद्दीपकों एवं शांत परिवेश को वरीयता देते हैं। दूसरी तरफ, बहिर्मुखी का उत्तेजक स्तर निम्न स्तर का होता है और इसलिए वे अधिक संवेदनशील नहीं होते हैं। उन्हें प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए अधिक उत्तेजना की आवश्यकता होती है। इसलिए, वे ऐसी परिस्थिति या उद्दीपन की तलाश में रहते हैं जो उत्तेजना की तरफ ले जाती है। इसी प्रकार से, मनोविक्षुब्धता की सहानुभूतिक तंत्रिका तंत्र या अंत्रिय मस्तिष्क के द्वारा व्याख्या की गई है। यह मनोविक्षुब्धता के संबंध में आंत्रिय मस्तिष्क को सक्रिय होने के लिए निचली सीमाओं के बारे में बात करता है। इसलिए, वे आसानी से व्यथित, चिंतित एवं चिड़चिड़े हो जाते हैं। इसकी तुलना में, सक्रिय होने के लिए ऊपरी सीमाओं का प्रयोग अधिक सांवेगिक संतुलन की तरफ ले जाता है।

अतः जैविक कारण हमारे विचार, संवेग एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। हालांकि, आइसेक जैविक कारकों के अतिरिक्त परिवेश के योगदान की भूमिका को भी मानते हैं।

1.5.5 व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था एवं व्यवहारवादी निषेध व्यवस्था

व्यक्तित्व के जैविकीय आधार पर जोर देने वाली हाल के सिद्धांतों में एक जेफ्री ग्रे (Jeffrey Gray) (1982) द्वारा बनाया गया मॉडल है। यह व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित करने के लिए व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था तथा व्यवहारवादी निषेध व्यवस्था के बारे में बताता है। व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था 'चलित व्यवस्था (go system)' है जो उद्दीपक तलाश करने तथा पुरस्कार अभिविन्यास के द्वारा विशेषित होती है। जबकि, व्यवहारवादी निषेध व्यवस्था मस्तिष्क की 'विराम' व्यवस्था (stop system) है जो व्यवहार का निषेध करती है क्योंकि यह चिंता की तरफ ले जा सकता है। यहाँ पर व्यक्ति दंड से बचना चाहता है जबकि व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था पुरस्कार के द्वारा प्रभावित होती है। इस प्रकार व्यवहारवादी निषेध व्यवस्था में संवेग एवं व्यवहार से जुड़े विभिन्न मस्तिष्क क्षेत्र समाहित होते हैं (डि यंग एंड ग्रे, 2009)।

1.5.6 आत्म तथा व्यक्तित्व के बारे में भारतीय परिप्रेक्ष्य

मनोविज्ञान की मुख्यधारा प्रमुख रूप से आत्म और व्यक्तित्व के बारे में पाश्चात्य सिद्धांत को प्रतिबिम्बित करती है। यह आत्म के प्रति एक व्यक्तिवादी अभिविन्यास की वकालत करती है तथा आत्म के स्वतंत्र अस्तित्व एवं विशिष्टता पर बल देती है। इसकी तुलना में, भारतीय सांस्कृतिक प्रथा आत्म को अंतर्संबंध तथा प्रासंगिक रूप में देखती है। दो प्रकार के आत्म-निर्माण: स्वतंत्र एवं परस्पर आश्रित स्व (Markus & Kitayana, 1991) के संदर्भ में भारतीय परिप्रेक्ष्य परस्पर आश्रित स्व की प्रस्ताव करता है। परस्पर आश्रित व्यक्ति परिवार, सामाजिक संदर्भ तथा स्वयं के गुणों पर अधिक ध्यान देता है और व्यक्तित्व अधिक विविधता पूर्ण एवं अस्थिर हो जाता है (सिकरेली एंड व्हाइट, 2018)।

भारतीय धर्मग्रंथ भगवद् गीता में बताया गया है कि सत्व, रजस, एवं तमस के रूप में व्यक्तित्व के तीन प्रकार होते हैं। भारतीय दर्शन में इन्हें 'त्रिगुण' या तीन गुण (प्रवृत्तियाँ/विशेषताएँ) कहा जाता है।

सत्त्व आध्यत्मिक पहलू - अच्छा स्वभाव, पांतिप्रिय एवं संतुलित व्यक्तित्व से संबंधित है।
रजस् उत्साह, सक्रियता, महत्वाकांक्षा, तेज एवं क्रिया-अभिमुखी व्यक्तित्व से संबंधित है।
तमस् - हमारे व्यक्तित्व के नकारात्मक पहलुओं - क्रोध, भय, आलस्य, नकारात्मक संवेगों से संबंधित है।

व्यक्तित्व के ये तीनों पहलू प्रत्येक व्यक्ति में होते हैं, हालांकि, व्यक्तित्व का एक प्रकार अन्य से प्रबल हो सकता है। इन तीनों गुणों की पारस्परिक क्रिया व्यक्ति के स्वभाव विशेषताएं तथा व्यक्तित्व के प्रकार को निर्धारित करती है।

आयुर्वेद तीन 'दोशों' के बारे में बताता है जिसका संयोजन प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वभाव एवं व्यक्तित्व में विशिष्ट बनाता है। ये तीन 'वात', 'पित्त', और 'कफ' हैं। ये तीनों मन-शरीर के प्रकार उन तत्वों के गुणों को प्रतिबिम्बित करते हैं जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। वात स्थान एवं हवा से संबंधित होता है, पित्त अग्नि एवं जल से संबंधित होता है तथा कफ जल एवं धरती तत्व से संबंधित होता है। प्रत्येक व्यक्ति में एक प्रबल दोश होता है जो उसके व्यक्तित्व में उन तत्वों के लक्षणों को प्रतिबिम्बित करता है। उदाहरणार्थ, वात की अधिकता वाला व्यक्ति प्रारूपिक रूप से अधिक सक्रिय होगा, वही पर पित्त की अधिकता वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व उग्र प्रकार का होगा। जब किसी व्यक्ति में सभी तीनों दोश उचित अनुपात में होते हैं तब यह एक संतुलित व्यक्तित्व के रूप में होता है।

आगे, मैस्त्रों के आवश्यकताओं के क्रम के अनुरूप तैत्तिरीय उपनिषद व्यक्ति को पाँच तत्वों से निहित रूप में देखता है (तालिका 1 एटी को देखिए)।

तालिका 1.1: तैत्तिरीय उपनिषद के अनुसार व्यक्ति के पाँच तत्व

अन्नमय कोश	भौतिक शरीर से संबंधित है।
प्राणमय कोश	शरीर के अंदरूनी जीवन से संबंधित है जो सांस लेने एवं अन्य आंतरिक प्रक्रियाओं के द्वारा शरीर को क्रियाशील रखता है।
मनोमय कोश	मन/ज्ञानेन्द्रियां शामिल हैं।
विज्ञानमय कोश	बुद्धि/संज्ञान से संबंधित है जो संसार को जानने में सहायता करता है।
आनंदमय कोश	सबसे आंतरिक परत जो आंतरिक खुशी या परमानंद प्राप्त करने से संबंधित है।

भारत की वेदान्तिक प्रथा व्यक्तित्व को 'कर्म' या व्यक्ति के कर्मों के रूप में संकल्पना करती है। जैसे व्यक्ति के कार्य/प्रतिक्रिया/व्यवहार होंगे, वैसे ही जीवन में उसके 'कर्म फल' या 'परिणाम' होंगे। जीवन का अंतिम उद्देश्य 'कर्म' को अधिक नहीं रखना है तथा जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मोक्ष प्राप्त करना है। यह अपने जीवन में अनासक्ति के अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

स्व आकलन प्रश्न 4

1) मैस्त्रों के आवश्यकताओं के क्रम का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

2) बिना शर्त सकारात्मक सम्मान किस सिद्धांत से संबंधित है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) वास्तविक आत्म तथा आदर्श आत्म के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) OCEAN से क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 सारांश

इस इकाई में हमने वैयक्तिक भिन्नताओं की अवधारणा के बारे में सीखा और मुख्य रूप से वैयक्तिक भिन्नताओं के महत्वपूर्ण पहलू व्यक्तित्व के परिचर्चा पर ध्यान केंद्रित किया। मनोवैज्ञानिकों ने स्वभावगत एवं गैर-स्वभावगत सिद्धांतों को शामिल करते हुए अनेक उपागमों के द्वारा व्यक्तित्व को समझने एवं व्याख्या करने की कोशिश किया है। यद्यपि स्वभावगत या विशेषक सिद्धांतों ने व्यक्तित्व के क्षेत्र में शोध पर वर्चस्व कायम किया है, परन्तु अन्य सिद्धांतों ने भी व्यक्तित्व को समझने में योगदान दिया है। इनमें से, मनोवेगीय सिद्धांतों ने अचेतन एवं सचेतन मनोवैज्ञानिक बलों के बीच वेगीय संघर्ष पर ध्यान केंद्रित किया है। इनकी तुलना में, व्यवहारवादी उपागम में अप्रत्यक्षनीय आंतरिक प्रक्रियाओं तथा वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के स्थान पर अधिगम, प्रबलन तथा प्रेक्षण पर बल दिया। सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांतों ने हमारे व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर दृष्टिकोण, चिंतन, स्मरणशक्ति तथा भाषा को शामिल करते हुए संज्ञान की भूमिका का पक्ष लिया। मानवतावादी उपागम या घटना-क्रिया उपागम ने व्यक्तिगत, वस्तुनिष्ठ अनुभवों तथा आत्मसिद्धि के बारे में बात किया। व्यक्तित्व का जैविकीय उपागम अन्तर्निहित जैविकीय सहसंबंधों के संदर्भ में व्यक्तित्व की व्याख्या करता है। मनोवैज्ञानिक विशेषक शारीरिक और क्रियात्मक पहलुओं, तंत्रिका तंत्र तथा मस्तिष्क तंत्र से जुड़े हुए हैं। व्यवहारवादी आनुवंशिक व्यक्तित्व पर

आनुवंशिक और गैर-आनुवंशिक या परिवेशीय कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रयास करता है। अंत में, व्यक्ति और व्यक्तित्व का भारतीय सिद्धांत व्यक्ति के एक परस्पर आश्रित तथा तर्क संगत विचार के साथ एक सामूहिक अभिविन्यास पर बल देता है।

1.7 प्रमुख शब्द

विभेदक मनोविज्ञान	: व्यक्तियों एवं उनकी अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक निर्धारकों के बीच निरीक्षण योग्य भिन्नताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।
व्यवहारवादी आनुवंशिकी	: वैयक्तिक भिन्नताओं के जैविकीय आधार के अध्ययन से संबंधित है।
स्वभाव	: एक विशेष प्रकार से महसूस करने या कार्य करने की सामान्य प्रवृत्तियों से संबंधित है।
विशेषक	: कार्य करने के लिए एक आंतरिक स्वभाव या वरीयता से संबंधित है।
रक्षा युक्तियाँ	: मानसिक युक्तियाँ हैं जो व्यक्ति को इदम् (इड) एवं पराहम् के बीच द्वन्द्व में टूट जाने से बचाती हैं।
नियंत्रण का ठिकाना	: लोगों के द्वारा मानी गई इस अवधारणा से संबंधित है कि अपने जीवन में उनका परिस्थितियों/घटनाओं पर नियंत्रण है कि नहीं है।
वृहत् पाँच	: मैक्री एंड कोस्टा के द्वारा दिए गए पाँच आधारभूत व्यक्तित्व विशेषकों से संबंधित है तथा संक्षिप्त रूप में OCEAN (खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, सहमतता तथा मनोविक्षुब्धता) के रूप में वर्णन किया गया है।

1.8 स्व आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्व आकलन प्रश्न 1

- 1) सत्य
- 2) विभेदक मनोविज्ञान
- 3) आनुवंशिकता/परिवेश

स्व आकलन प्रश्न 2

- 1) नहीं
- 2) आलपोर्ट ने व्यक्तित्व को "व्यक्ति के अंदर उन मनोवैज्ञानिक व्यवस्थाओं के ऐसे गतिशील संघटन के रूप में परिभाषित किया है जो व्यक्ति के विशेष व्यवहार एवं विचार को निर्धारित करता हैं"।
- 3) स्वभाव एक विशेष तरीके से महसूस करने या कार्य करने की सामान्य प्रवृत्तियों से संबंधित है।
- 4) विशेषक कार्य करने के लिए आंतरिक स्वभाव या वरीयता पर कायम रहते हैं। इस प्रकार, यह व्यक्तियों के बीच भिन्नताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जबकि अवस्थाएं व्यक्ति के अंदर भिन्नताओं से संबंधित होती है।

स्व आकलन प्रश्न 3

- 1) फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व की तीन आधार भूत संरचनाएं हैं - इड, अहम् और पराहम्।
- 2) सविराम प्रबलन सूची के चार प्रकार हैं - निश्चित अनुपात, निश्चित अंतराल, परिवर्तनशील अनुपात तथा परिवर्तनशील अंतराल सूची।
- 3) सामाजिक अधिगम सिद्धांत तर्क देता है कि सामाजिक परिस्थितियों में प्रेक्षण एवं अनुकरण हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है तथा हमारे व्यक्तित्व को निर्धारित करने में प्रभाव डालता है।
- 4) नियंत्रण का बाहरी ठिकाना अनुमान लगाता है कि नियंत्रण व्यक्ति के बाहरी तरफ से होता है तथा अन्य व्यक्तियों/परिस्थिति/भाग्य/प्रारब्ध आदि में निहित होता है।

स्व आकलन प्रश्न 4

- 1) मैस्लों का आवश्यकताओं का क्रम सबसे नीचे जैविक आवश्यकताएं, फिर सुरक्षा की आवश्यकताएं, प्रेम तथा अपनेपन की आवश्यकताएं, आत्म सम्मान की आवश्यकता तथा अंत में आत्म सिद्धि आवश्यकताओं को समाहित करता है।
- 2) रोजर्स का सेवार्थी, केंद्रित सिद्धांत
- 3) वास्तविक आत्म वर्तमान में जो आप वास्तव में हैं तथा आत्मसिद्धि के द्वारा आप क्या कर सकते हैं, इससे संबंधित हैं। आदर्श आत्म आप आदर्श रूप से क्या होना पसंद करेंगे, इससे संबंधित है और यह समाज की अपेक्षाएं तथा मांगों को कि आपको क्या होना चाहिए, यह प्रतिबिम्बित करता है।
- 4) OCEAN - खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, सहमतता तथा मनोविक्षुब्धता से संबंधित है।

1.9 इकाई के अंत में प्रश्न

- 1) व्यवहारवादी सिद्धांत व्यक्तित्व की किस प्रकार से व्याख्या करता है? आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।
- 2) फ्रायड के मनोविश्लेषक सिद्धांत की मैस्लों के व्यक्तित्व के उपागम से तुलना कीजिए।
- 3) व्यक्तित्व के विकास के संदर्भ में प्रकृति एवं पालन-पोषण विवाद पर परिचर्चा कीजिए।
- 4) अलपोर्ट के व्यक्तित्व के विशेषक सिद्धांत की परिचर्चा कीजिए।
- 5) वृहत् पांच सिद्धांत की व्याख्या कीजिए तथा पंच कारक सिद्धांत का मूल्यांकन कीजिए।
- 6) व्यक्तित्व के व्यवहारवादी उपागम व्यवस्था (BAS) तथा व्यवहारवादी निशेध व्यवस्था (BAS) प्रतिमान की व्याख्या कीजिए।

1.10 सन्दर्भ

Allport, G.W. (1937). *Personality - a psychological interpretation*. New York: Henry Holt and Company.

Allport, G. W. (1961). *Pattern and growth in personality*. New York, NY: Holt, Rinehart & Winston

- Allport, G. W., & Odbert, H. S. (1936). Trait-names: A psycho-lexical study. *Psychological Monographs*, 47, i-171.
- Bandura, A. & Walters, R. H. (1963). *Social learning and personality development*. New York: Holt Rinehart and Winston.
- Buss, A. H., & Plomin, R. (1984). *Temperament: Early developing personality traits*. Hillsdale, NJ: Earlbaum.
- Cattell, R. B. (1965). *The scientific analysis of personality*. London, England: Penguin.
- Chamorro-Premuzic, T. (2015). *Personality and individual differences*. (3rd Ed.), UK: British Psychological Society and John Wiley & Sons Ltd.
- Ciccarelli, S.K., & White, J.N. (2018). *Psychology* (5th ed.), adapted by G. Misra, Indian subcontinent adaptation. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.
- DeYoung, C. G., & Gray, J. R. (2009). Personality neuroscience: Explaining individual differences in affect, behaviour and cognition, In P.J. Corr & G. Matthews (Eds.), *The Cambridge handbook of personality psychology* (pp. 323-346). New York, NY: Cambridge University Press.
- Eysenck, H. J. (1967). *The biological basis of personality*. Springfield, IL: Thomas.
- Funder, D. C. (1997). *The personality puzzle*. New York: W. W. Norton.
- Gray, J. A. (1982). On mapping anxiety. *Behavioural and Brain Sciences*, 5, 506-534.
- Haslam, N, Smillie, L, & Song, J. (2017). *An introduction to personality, individual differences and intelligence*, (2nd ed.), UK: Sage Publications.
- Heller, D., Watson, D., & Ilies, R. (2004). The role of person versus situation in life satisfaction: A critical examination. *Psychological Bulletin*, 130, 574-600.
- Koltko-Rivera, M. E. (2006). Rediscovering the later version of Maslow's hierarchy of needs: Self-transcendence and opportunities for theory, research, and unification, *Review of General Psychology*, 10 (4), 302-317.
- Markus, H. R., & Kitayama, S. (1991). Culture and the self: Implications for cognition, emotion and motivation. *Psychological Review*, 98, 224-253.
- Maslow, A. H. (1971). *The farther reaches of human nature*. New York: The Viking Press.
- Maslow, A. H. (1996). Critique of self-actualization theory. In E. Hoffman (Ed.), *Future visions: The unpublished papers of Abraham Maslow*. Thousand Oaks, CA: Sage, pp. 26-32.
- McCrae, R. R., & Costa, P. T. Jr. (1999). A five-factor theory of personality. In L. A. Pervin & O. P. John (Eds.), *Handbook of personality: Theory and research* (2nd ed., pp. 139-153). New York, NY: Guilford Press.
- Mischel, W. (1973). Toward a cognitive social learning reconceptualization of personality. *Psychological Review*, 80, 252-283.

Mischel, W. & Shoda, Y. (1995). A cognitive-affective system theory of personality: Reconceptualizing situations, dispositions, dynamics, and invariance in personality structure. *Psychological Review*, 102, 246-268.

Paunonen, S. V., & Ashton, M. C. (2001). Big five factors and facets and the prediction of behaviour. *Journal of Personality and Social Psychology*, 81, 524-539.

Rogers, C. R. (1961). *On becoming a person*. Boston, MA: Houghton Mifflin.

Rogers, C. R., & Barry, S. (1967). *Person to Person*. Walnut Creek, CA: Real People Press.

Rothbart, M. K. (2011). *Becoming who we are: Temperament and personality in development*. New York: Guilford Press.

Rotter, J. B. (1954). *Social learning and clinical psychology*. New York, NY: Prentice-Hall.

Turkheimer, E., Pettersson, E., & Horn, E. E. (2014). A phenotypic null hypothesis for the genetics of personality. *Annual Review of Psychology*, 65, 515-540

Yamagata, S., Suzuki, A., Ando, J., Ono, Y., Kijima, N., Yoshimura, K. et al. (2006). Is the genetic structure of human Personality universal? A cross-cultural twin study from North America, Europe, and Asia. *Journal of Personality and Social Psychology*, 90, 987-998.

1.11 अनुशंसित अध्ययन

- Allport, G. W. (1937). *Personality: A psychological interpretation*. New York: Henry Holt and Company.
- Bandura, A. (1977). *Social learning theory*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.
- Baron, R.A. (2005). *Psychology* (5th ed.). New Delhi: Pearson Education.
- Cattell, R. B. (1965). *The scientific analysis of personality*. Baltimore: Penguin Books.
- Ciccarelli, S.K., & White, J.N. (2018). *Psychology* (5th ed.), adapted by G. Misra, Indian subcontinent adaptation. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.
- Chamorro-Premuzic, T. (2015). *Personality and individual differences*. (3rd Ed.), UK: British Psychological Society and John Wiley & Sons Ltd.
- Eysenck, H. J. (1982). *Personality, genetics, and behaviour*: New York: Praeger
- Haslam, N., Smillie, L., & Song, J. (2017). *An introduction to personality, individual differences and intelligence* (2nd ed.). UK: Sage.

इकाई 2 व्यक्तित्व का मूल्यांकन*

संरचना

- 2.1 उद्देश्य
- 2.2 परिचय
- 2.3 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा
 - 2.3.1 एक अच्छे परीक्षण के लक्षण/गुण
 - 2.3.2 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की आचारनीति
- 2.4 व्यक्तित्व का मूल्यांकन: इसके उपयोग
- 2.5 व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधियां
 - 2.5.1 प्रेक्षण
 - 2.5.2 साक्षात्कार
 - 2.5.3 व्यक्तित्व सूची
 - 2.5.4 निर्धारण/रेटिंग स्केल्स
 - 2.5.5 व्यवहारपूरक आँकड़े
 - 2.5.6 स्थितिपरक परीक्षण
 - 2.5.7 प्रक्षेपी तकनीक
- 2.6 सारांश
- 2.7 प्रमुख शब्द
- 2.8 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर
- 2.9 इकाई के अंत में प्रश्न
- 2.10 संदर्भ
- 2.11 अनुशासित अध्ययन

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित में समर्थ होंगे :

- मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा की व्याख्या करना;
- व्यक्तित्व मूल्यांकन का वर्णन करना;
- व्यक्तित्व मूल्यांकन के महत्व एवं प्रयोग को जानना; तथा
- व्यक्तित्व मूल्यांकन की अनेक विधियों का वर्णन करना।

2.2 परिचय

पिछली इकाई में आपने व्यक्तित्व तथा व्यक्तित्व की व्याख्या करने वाले विभिन्न सिद्धांतों के बारे में पढ़ा। इस इकाई में, हम व्यक्तित्व के मूल्यांकन के बारे में सीखेंगे। हमारा व्यवहार, सामाजिक पारस्परिक क्रियाएं एवं संबंध हमारे व्यक्तित्व को काफी हद तक

*प्रो. स्वाति पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली एवं डा. रितु शर्मा, सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, एमिटि विश्वविद्यालय, नोएडा।

प्रभावित करते हैं। अतः हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में इसके निहितार्थ को समझने के लिए अपने व्यक्तित्व को जानना और इसका मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण होता है। यह हमारे क्रिया-कलाप में अधिक प्रभावशीलता के लिए हमारे व्यक्तित्व को विकसित करने, संशोधित करने एवं सुधार करने में सक्षम बनाएगा। व्यक्तित्व का मूल्यांकन शोध का एक प्रमुख क्षेत्र है तथा विभिन्न सिद्धांतों ने व्यक्तित्व मूल्यांकन के विकास को प्रभावित किया है। जिस तरह से विभिन्न सिद्धांतों के द्वारा व्यक्तित्व का व्याख्या किया गया है, उसका निहितार्थ व्यक्तित्व के मूल्यांकन पर होता है। उदाहरणार्थ- विशेषक सिद्धांत व्यक्ति में विशेष विशेषकों पर पता लगाने में अधिक ध्यान केंद्रित करता है, वहीं पर मनोविश्लेषक व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए प्रक्षेपीय तकनीक प्रयोग करेंगे। हालांकि व्यक्ति के व्यक्तित्व को मापने या आकलन करने की व्यावहारिक स्थिति में, आप पाएंगे कि मनोवैज्ञानिक विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों का संयोजक करके एक समग्र उपागम का पालन करते हैं।

हमें व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने की आवश्यकता क्यों होती है? यह हमें किस प्रकार से सहायता करता है? किन क्षेत्रों/पहलुओं में यह आवश्यक होगा? इस इकाई में, हम व्यक्तित्व मूल्यांकन के अर्थ एवं महत्व पर परिचर्चा करेंगे। मनोवैज्ञानिक आकलन की अवधारणा तथा मूल्यांकन में शामिल आचारनीतिय संबंधी मुद्दों पर भी परिचर्चा की जाएगी। उसके पश्चात्, व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने की अनेक विधियों जैसे - प्रेक्षण, साक्षात्कार, व्यक्तित्व सूची, निर्धारण पैमाने, व्यवहारपरक आंकड़े, स्थितिपरक परीक्षणों तथा प्रक्षेपीय तकनीकों पर भी परिचर्चा की जाएगी।

2.3 मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की अवधारणा

एक व्यक्ति के कुछ पहलुओं या विशेषताओं के बारे में सोचिए जिसे आप उस व्यक्ति के विशिष्ट व्यवहार से संबंधित करते हैं। उदाहरणार्थ - कार्निया (नेत्रपतल) का रंग प्रायः व्यक्ति के स्मार्ट होने से संबंधित किया जाता है। आप इस प्रकार से बहुत से अनुमानों से परिचित होंगे जिनकी वैधता के लिए कोई भी वैज्ञानिक सहारा नहीं होता है और इस प्रकार अधिकतर मिथक होते हैं। अतः, हम लोगों के व्यक्तित्व की विशेषताओं के बारे में कैसे जान सकते हैं। हम वैयक्तिक भिन्नताओं को कैसे मापते हैं? जैसा कि हम जानते हैं कि व्यक्ति अपनी अभिरुचियों, अभिक्षमता, उपलब्धि के साथ-साथ बुद्धि, मनोदशा, उद्देश्य एवं व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न होते हैं। इन पहलुओं में वैयक्तिक भिन्नताओं का पता लगाने के क्रम में मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक आकलन का प्रयोग करते हैं। वैयक्तिक भिन्नताओं का यह मनोवैज्ञानिक आकलन या मापन एक व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन करता है। यह वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है तथा एक विश्वसनीय एवं वैध माप होने के आवश्यक मापदंड को पूरा करता है।

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन महत्वपूर्ण क्यों है? जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, यह मानव विकास एवं व्यवहार के अनेक पहलुओं को मापने के उद्देश्य पर आधारित है। मुख्य रूप से, यह मानव व्यवहार का वर्णन करने, व्याख्या करने तथा भविष्यवाणी करने में सहायता करता है। यह निर्णय लेने में सहायता करता है तथा मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान करता है। इससे आगे, मनोवैज्ञानिकों के द्वारा मनोवैज्ञानिक आकलन अनेक क्षेत्रों जैसे शिक्षा, करियर, चिकित्सीय तथा संगठनात्मक व्यवस्था में प्रयोग किया जाता है। इसकी सामाजिक मनोविज्ञान, तंत्रिका मनोविज्ञान, फोरेसिक मनोविज्ञान तथा वास्तव में मनोविज्ञान की प्रत्येक अन्य शाखा में भी प्रासंगिकता है क्योंकि मानव जीवन के अध्ययन के लिए मानव व्यवहार को मापना आधारभूत कदम है।

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के कुछ सिद्धांत हैं जिनका मूल्यांकनों का प्रयोग करते समय पालन करने की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन की निम्नलिखित गुणों की आवश्यकता होती है -

- a) **व्यापक एवं समग्र** : व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं को एकीकृत करते हुए सभी प्रासंगिक पहलुओं का विवरण लेने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ को समझने की आवश्यकता होती है।
- b) **व्यवस्थित**: मूल्यांकन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। इसमें यह योजना समाहित रहती है कि क्या, कैसे और क्यों मूल्यांकन करना है। मूल्यांकन प्रक्रिया के क्रम में निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं - मूल्यांकन के उद्देश्यों या लक्ष्यों के बारे में निर्णय लेना, चिह्नित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन विधियों या तकनीकों की पहचान करना, मूल्यांकन उपकरणों का प्रयोग करना, डाटा का संग्रह करना, मूल्यांकन डाटा/प्राप्तियों की अंकगणना करना एवं उचित व्याख्या करना, समग्र चित्र प्राप्त करने के लिए भिन्न स्रोतों से प्राप्त डाटा को एकीकृत करना तथा संबंधित व्यक्ति के जीवन के अनेक क्षेत्रों के लिए मूल्यांकन सूचनाओं/डाटा के निहितार्थ का सूत्रीकरण करना।
- c) **सतत्** : मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एक बार की गतिविधि नहीं है। मानव व्यवहार के वेगीय स्वभाव को पकड़ने के लिए इसके सतत् मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। अलग-थलग मूल्यांकन व्यक्ति के सही स्वभाव को प्रदर्शित नहीं कर सकता है।
- d) **सटीक**: क्या मापा जाना है, मूल्यांकन इस संबंध में एकदम सटीक होना चाहिए जो यह मापना चाहता है। विश्वसनीयता एवं वैधता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- e) **गोपनीय**: मूल्यांकन की प्राप्तियों को गोपनीय रखना चाहिए। संबंधित व्यक्ति को इसके बारे में सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन एक व्यक्ति के पहलुओं जैसे उद्देश्य, सामाजिक विशेषकों, अभिवृत्ति, समायोजन तथा अभिरुचि के बारे में निष्कर्ष निकालने की वैज्ञानिक एवं मानकीकृत विधि हैं।

यहाँ पर हमें मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (psychological assessment) एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण (psychological testing) के बीच अन्तर करने की आवश्यक है।

एनास्टसी (Anastasi) के अनुसार, "मनोवैज्ञानिक परीक्षण, व्यवहार के नमूने का आवश्यक रूप से वस्तुनिष्ठ एवं मानकीकृत माप है" (एनास्टसी एंड उर्बिना, 2017, पृ. 6)।

इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण आकलन का एक वस्तुनिष्ठ उपकरण है। यह एक मानकीकृत माप या उपकरण है। यह परीक्षण के आयोजन, निर्देश एवं अंक गणना के सर्वमान्य तरीके उपलब्ध करता है। पूर्व-परिभाषित सही एवं गलत प्रतिक्रियाओं के आधार पर अंकगणना की जाती है। सही एवं गलत प्रतिक्रियाओं की अंकगणना के पश्चात् मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि क्या संबंधित व्यक्ति जिसके ऊपर यह परीक्षण किया गया है, वह प्राप्तांकों के आधार पर निश्चित मापदंड में आता है कि नहीं आता है। इस प्रकार, प्राप्तांकों की उचित व्याख्या भी मानकीकृत होती है। मनोवैज्ञानिक परीक्षण मुख्य रूप से स्व-रिपोर्ट, वस्तुनिष्ठ प्रकार के पेपर एवं पेंसिल परीक्षण होते हैं। यह आयोजन एवं अंकगणना को आसान बनाने में सहायता करता है।

यद्यपि परीक्षण एवं आकलन पारिभाषिक शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, परन्तु आकलन व्यक्ति के विस्तृत मूल्यांकन से संबंधित है जिसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण,

पर्यवेक्षण, प्रेक्षण, साक्षात्कार, सेवार्थी का विवरण तथा जनसांख्यिकीय सूचना आदि शामिल होती है तथा जिससे अध्ययन के अंतर्गत आने वाले पहलू/व्यवहार का संपूर्ण एवं व्यापक मूल्यांकन मिलता है। उदाहरणार्थ - एक परामर्श मनोवैज्ञानिक किसी एक समायोजन उपकरण/प्रश्नावली का प्रयोग करके सेवार्थी के आधार-भूत समायोजन मुद्दों को समझने के अलावा इस मुद्दे को समझने के लिए सेवार्थी से पारस्परिक क्रिया एवं साक्षात्कार भी करेगा।

इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक आकलन मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व आदि का आकलन करने के लिए तथा इसके बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए प्रयोग किया जाता है। यह प्रेक्षणों का मात्रात्मक निर्धारण भी संभव बनाता है और इस प्रकार सभी के लिए तुलना करने में इसे आसान बना देता है।

2.3.1 एक अच्छे परीक्षण के गुण

मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं उपकरण व्यवस्थित शोध के पश्चात् निर्मित किए जाते हैं जो परीक्षण निर्माता को उनके द्वारा निर्मित परीक्षण को मानकीकृत करने के योग्य बनाता है और आगे परीक्षण की वैधता एवं विश्वसनीयता स्थापित करता है। किसी भी आकलन तकनीक को एक उपयुक्त एवं प्रभावी तकनीक के रूप में मानने के लिए निम्नलिखित मापदंडों को अवश्य पूरा करना चाहिए।

- मानकीकरण
- मानदंड
- विश्वसनीयता
- वैधता

ये एक अच्छे परीक्षण की चारित्रिक विशेषताएं हैं जिसे मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के साधनों में सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है।

मानकीकरण परीक्षण के आयोजन, अंकगणना तथा परीक्षण प्रतिक्रियाओं की उचित व्याख्या में एकरूपता से संबंधित है। यह सुनिश्चित करता है कि चाहे यह अलग-अलग शोधकर्ताओं/व्यक्तियों के द्वारा आयोजित किया जाता है परन्तु इसमें किसी भी प्रकार की विविधता न हो। इसलिए, सभी परीक्षार्थियों को एक समान निर्देश दिए जाते हैं कि परीक्षण को कैसे लेना है तथा उत्तर देना है।

मानदंड प्रतिनिधि नमूने के द्वारा प्राप्त की गई अंकगणना से संबंधित है जिसके ऊपर प्रारंभ में परीक्षण विकसित किया गया था। ये परीक्षण मानदंड उच्च, निम्न तथा औसत प्रदर्शन के बारे में सूचना प्रदान करते हैं। परीक्षण लेने वाले व्यक्ति के प्राप्तांकों की बाद में इन मानदंडों या मानकीकृतों के साथ तुलना की जाती है, ताकि मानकीकृत नमूने की तुलना में व्यक्ति की सापेक्ष स्थिति को पहचाना जा सके।

विश्वसनीयता एवं **वैधता** मनोवैज्ञानिक उपकरण या आकलन के दो अन्य महत्वपूर्ण मानदंड हैं। विश्वसनीयता परीक्षण में एक व्यक्ति के द्वारा प्राप्त किए गए प्राप्तांकों की निरंतरता से संबंधित है। यह सुनिश्चित करता है कि परीक्षण में व्यक्ति की प्रतिक्रियाएं दुबारा लिए गए आयोजन में भिन्न नहीं होती हैं जो यह संकेत देता है कि परीक्षण एक विश्वसनीयता माप है। एक उपकरण की विश्वसनीयता की परीक्षा लेने के लिए विभिन्न प्रकार की विधियां हैं। वैधता एक परीक्षण कितने अच्छे से उसकी माप करता है जिसके के लिए इसे आयोजित किया गया है, से संबंधित है। विषयवस्तु वैधता है कि क्या विषयवस्तु

जो कि परीक्षण सामग्रियाँ हैं, वे उस समूचे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसे मापा जाना है। विश्वसनीयता के समान, वैधता भी विभिन्न प्रकार की होती है। आप विश्वसनीयता एवं वैधता के बारे में सेमेस्टर III में BPCC-105 : मनोवैज्ञानिक शोध में पढ़ेंगे।

2.3.2 मनोवैज्ञानिक आकलन की आचार नीति

मनोवैज्ञानिक आकलन की किसी भी परिचर्चा में इसमें निहित आचारनीति के ज्ञान एवं समझ को शामिल करना चाहिए। मनोवैज्ञानिक आकलन को कुछ आचारनीतीय दिशानिर्देशों का पालन करने की आवश्यकता होती है जो परीक्षणाधीन व्यक्ति के अधिकारों की सुरक्षा करने के उद्देश्य पर आधारित होती हैं। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ (APA) ने निम्नलिखित दिशानिर्देशों को तय किया है जिसका मनोवैज्ञानिकों/शोधकर्ताओं के द्वारा अनुपालन किया जाना चाहिए।

- 1) मनोवैज्ञानिक आकलन केवल प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिकों के द्वारा किया जाना चाहिए। यह इस तथ्य के समान है कि आप किसी ऐसे व्यक्ति से अपनी रक्त की जाँच की रिपोर्ट नहीं बनवाना चाहते जिसने मेडिकल डिग्री में प्रशिक्षण नहीं लिया है।
- 2) बिना औपचारिक डिग्री एवं प्रशिक्षण के मनोवैज्ञानिक परीक्षण का प्रयोग करना आचार नीति के अनुरूप नहीं है। मनोवैज्ञानिक को परीक्षण, इसके आयोजन, अंकगणना तथा उचित व्याख्या की विधि के बारे में जानकारी होनी चाहिए। उसे परीक्षण की सामग्रियों से भी परिचित होना चाहिए कि यह कब तैयार किया गया तथा परीक्षण के मानदंड क्या हैं। यह महत्वपूर्ण है कि मनोवैज्ञानिक व्यक्ति/सेवार्थी के आयु वर्ग, परिस्थिति तथा परीक्षण का उद्देश्य ध्यान में रखते हुए मनोवैज्ञानिक आकलन के लिए उचित परीक्षण का चयन करें।
- 3) किसी भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आयोजन से पहले सेवार्थी को परीक्षण के उद्देश्य एवं उपयोग के बारे में संक्षिप्त में बताना चाहिए। इसे सूचित सहमति (informed consent) कहा जाता है। अतः यह अपेक्षित होता है कि सेवार्थी को परीक्षण के उद्देश्य के बारे में जानकारी हो तथा परीक्षण आयोजित करने के लिए उसकी सहमति प्राप्त की गई है।
- 4) सेवार्थी को परीक्षण से प्राप्त जानकारियों को गोपनीय रखने के बारे में भी सूचित करना चाहिए।
- 5) एक मनोवैज्ञानिक/शोधकर्ता के रूप में आपको जानकारियों को बिना पक्षपात के उपलब्ध करने की आवश्यकता भी होती है। परीक्षण परिणाम को एक उपयुक्त तरीके से संप्रेषित करना मनोवैज्ञानिक आकलन का एक महत्वपूर्ण पहलू होता है।
- 6) एक मनोवैज्ञानिक के रूप में आपको सेवार्थी की गोपनीयता सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है। सेवार्थी की सहमति के बिना उसकी मनोवैज्ञानिक परीक्षण रिपोर्ट का प्रयोग करना या साझा करना नैतिक रूप से गलत है। हालांकि, इसके अपवाद भी हैं जहां पर सेवार्थी की जिन्दगी या सामाजिक खतरे का डर होता हो।
- 7) परीक्षण लेने की परिस्थिति, तथा परीक्षण देने वाले/सेवार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि एवं आचारनीति के प्रति जागरूक रहना भी महत्वपूर्ण होता है क्योंकि ये परीक्षण परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं।

आचारनीति दिशानिर्देशों के बारे में विस्तृत विवरण के लिए आप अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ की वेबसाइट (www.apa.org) देख सकते हैं।

स्व आकलन प्रश्न 1

बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत।

- 1) मनोवैज्ञानिक परीक्षण की तुलना में मनोवैज्ञानिक आकलन विस्तृत परिभाषा है।
- 2) विश्वसनीयता इससे संबंधित है कि एक परीक्षण वह मापन कितनी अच्छी तरह से करता है जिसे मापना अभिप्रेत होता है।
- 3) मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रयोग में आसान हैं और किसी के भी द्वारा आयोजित किए जा सकते हैं।
- 4) सूचित सहमति मनोवैज्ञानिक परीक्षण का महत्वपूर्ण भाग है।

2.4 व्यक्तित्व का मूल्यांकन : इसके उपयोग

व्यक्तित्व का मूल्यांकन व्यक्तित्व विशेषकों तथा व्यक्ति की विशेषताओं को मापने के उद्देश्य पर आधारित होता है। व्यक्तित्व हमारे बारे में बताता है तथा हम सब का एक अविभाज्य हिस्सा है। अतः, हमें अपने व्यक्तित्व के बारे में जानने की आवश्यकता होती है क्योंकि हमारे जीवन के कई पहलुओं में इसका निहितार्थ होता है जैसे - स्वयं को सुधारने के लिए, प्रभावपूर्ण सामाजिक संबंधों एवं पारस्परिक क्रियाओं के लिए, अच्छे स्वास्थ्य, कुशल कार्य प्रदर्शन आदि। व्यक्तित्व को अनेक क्षेत्रों में परिणाम के साथ संबंधित करना पाया गया है जैसे - शिक्षा, कॅरियर, परमर्ष तथा चिकित्सा। हम संक्षिप्त रूप में इन क्षेत्रों में व्यक्तित्व के मूल्यांकन के प्रयोग के बारे में परिचर्चा कर सकते हैं।

विद्यालय एवं शैक्षिक व्यवस्था में व्यक्तित्व मूल्यांकन का विस्तृत दायरा है। व्यक्तित्व को बच्चे के प्रदर्शन के साथ संबंधित कर दिया गया है। शोध अध्ययनों (स्टीव्स एवं स्लैविन, 1995) ने पाया है कि विशेषक सहमतता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ सकता है। इसी प्रकार, कर्तव्यनिष्ठा जैसे अन्य व्यक्तित्व विशेषक जो व्यवस्थित एवं चिंतनशील होने से संबंधित हैं, वे भी शैक्षिक सफलता को प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व विशेषक, विद्यालय में सामान्य रूप से प्रचलित घटना हिंसक व्यवहार से भी जुड़े हैं। अध्ययनों (स्ली एंड रिग्बी, 1993; कोनाली एंड ओमूर, 2003) में हिंसक व्यवहार में लिप्त लोगों के व्यक्तित्व विशेषकों का परीक्षण किया है और उनमें उच्च स्तर की मानसिक संगणता (psychoticism) देखी गई है। संभावित हिंसक व्यवहार वालों की शुरुआती पहचान तथा इसकी रोकथाम में इसका महत्वपूर्ण निहितार्थ है।

व्यक्तित्व मूल्यांकन का कॅरियर निर्णय में प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है तथा कॅरियर आवश्यकताओं एवं व्यक्तित्व विशेषकों के बीच उपयुक्तता खोजी जाती है। क्या आप विभिन्न कॅरियर के लिए आवश्यक व्यक्तित्व विशेषकों के बारे में सोच सकते हैं, जैसे - शिक्षक, चिकित्सक, प्रबंधक, फैंशन डिजाइनर, राजनीतिज्ञ तथा सिपाही? जबकि कुछ कॅरियर में सफल होने के लिए ठेठ विशेषकों (typical traits) का होना बहुत अधिक निर्णायक नहीं होता है परन्तु कुछ अन्य कॅरियर में कुछ विशेष व्यक्तित्व विशेषकों का होना आवश्यक होता है। उन कॅरियर के बारे में सोचिए जहां कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व विशेषकों का होना आवश्यक होता है। ये विशेषक इस प्रकार के कॅरियर के लिए आवश्यक होते हैं जिनमें इनके बिना अच्छा प्रदर्शन करना संभव नहीं होगा। अतः, व्यक्तित्व मूल्यांकन की कॅरियर निर्णय एवं कॅरियर परामर्श में एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

व्यक्तित्व मूल्यांकन का चिकित्सीय प्रयोग व्यक्तित्व विकारों का निदान करने के लिए व्यक्तित्व परीक्षणों के प्रयोग में परिलक्षित होता है। परामर्श में भी इसका निहितार्थ है। हम

जानते हैं कि 'प्रकार अ' (Type A) व्यक्तित्व अधिक प्रतियोगितात्मक, महत्वकांक्षी, अधीर होते हैं, बल प्रयोग की प्रवृत्ति होती है, आत्म विश्लेषण में कभी होती है, स्वभाव में आक्रामक होते हैं तथा उन्हें सदैव समय की जल्दी रहती है। इस प्रकार के व्यक्तित्व वाले लोगों को हृदय संबंधी समस्याओं से अधिक ग्रसित पाया गया है (विलियम. इट. अल. 2000)। इस प्रकार, व्यक्तित्व का हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ सकता है और अपने व्यक्तित्व को जानने से हमें अपने स्वास्थ्य व्यवहार एवं आदतों में सुधार करने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

व्यक्तित्व का हमारे स्वास्थ्य एवं कुशलक्षेम पर असर होता है। यह हमारी स्वास्थ्य आदतों को प्रभावित करना है। अध्ययनों में व्यक्तित्व विशेषकों एवं हमारे स्वास्थ्य के बीच संबंध का पता चला है। बूथकेली एंड विकर्स (1994) के द्वारा अध्ययन में कहा गया है कि OCEAN (अनुभव के प्रति खुलापन, कर्त्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता, हमतता तथा मनोविक्षुब्धता) कारक अच्छी एवं खराब स्वास्थ्य आदतों दोनों से संबंधित हैं। उदाहरणार्थ उन्होंने बहिर्मुखता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा को स्वस्थ जीवनशैली से संबंधित पाया तथा अनुभव के प्रति खुलेपन को नशीले पदार्थ लेने जैसे खतरनाक व्यवहारों से संबोधित पाया।

व्यक्तित्व मूल्यांकन की औद्योगिक एवं संगठनात्मक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें यह जानने की आवश्यकता होती है कि कार्य स्थल पर हमारा व्यक्तित्व हमारे साथ-साथ अन्य लोगों को किस प्रकार से प्रभावित करता है। यह हमारे लिए निर्णायक होता है क्योंकि हम कार्यस्थल पर अपने समय का एक बड़ा हिस्सा अपने साथियों, कनिष्ठ, वरिष्ठ एवं हमउम्र व्यक्तियों के साथ व्यतीत करते हैं। इसलिए, लोगों के साथ व्यवस्थित ढंग से रहने का कौशल, अनुकूलता, धैर्य, संवेग को नियंत्रित रखना, प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करने के लिए नेतृत्व क्षमता आदि होना आवश्यक हो जाता है। समूह में कार्य करने, अन्य लोगों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने तथा प्रभावपूर्ण तरीके से संप्रेषण करने की आवश्यकता होती है। वास्तव में, नौकरी में काम का प्रदर्शन, नौकरी में संतुष्टि तथा संगठन में सफलता के प्रति व्यक्तित्व विशेषक शैक्षिक डिग्री की तुलना में अधिक योगदान देते हैं।

व्यक्तित्व मूल्यांकन का उपयोग बहुत से अन्य क्षेत्रों जैसे खेल एवं मिलिट्री व्यवस्था में भी देखा जा सकता है। रक्षा सेवाओं में व्यक्ति को विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट कार्य संरचना तथा पदक्रम के साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है। अतः, उसे व्यक्ति में विशिष्ट व्यक्तित्व विशेषकों की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, व्यक्तित्व मूल्यांकन की विभिन्न क्षेत्र में प्रासंगिकता एवं उपयोग है। जैसा कि व्यक्तित्व हमारा एक अभिन्न भाग है, इसलिए हम जो कुछ करते हैं उसमें इसका निहितार्थ होता है और इस प्रकार व्यक्तित्व मूल्यांकन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। अब हमें व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग की जाने वाली अनेक विधियों के बारे में जानना है।

2.5 व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधियाँ

व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए बहुत ही विधियों का प्रयोग किया जाता है। विस्तृत रूप से उन्हें दो समूहों में रखा जा सकता है : प्रत्यक्षविधि तथा अप्रत्यक्ष विधि। प्रत्यक्ष विधि में प्रेक्षण, साक्षात्कार, व्यक्तित्व सूची/प्रश्नावली, निर्धारण पैमाने, व्यवहारपरक आंकड़े तथा स्थितिपरक परीक्षण शामिल हैं। अप्रत्यक्ष विधि में प्रक्षेपीय तकनीकें शामिल हैं। अब हमें इनमें से प्रत्येक के बारे में परिचर्चा करनी है।

2.5.1 प्रेक्षण (Observation)

व्यवहारपरक प्रेक्षण एक प्रत्यक्ष विधि है जिसमें व्यक्ति का विभिन्न परिस्थितियों में प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षण किया जाता है। यह आवश्यक है कि यदि हम किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में जानना चाहते हैं, तो हम उसके बारे में तभी जान पाएंगे जब हम अनेक परिस्थितियों में उस व्यक्ति का प्रेक्षण करते हैं।

प्रेक्षण के समय, एक मनोवैज्ञानिक का उद्देश्य व्यवहार के तरीके को देखना होता है जो विशेष रूप से कारण एवं प्रभाव को बताता हो। सेवार्थी का प्रेक्षण करते समय मनोवैज्ञानिक महत्वपूर्ण बिंदुओं को लिखेगा जो किए गए प्रेक्षण के आधार पर सेवार्थी के बारे में निष्कर्षों को निकालने में आगे चलकर प्रयोग किए जाते हैं। प्रेक्षण के समय मनोवैज्ञानिक यह प्रयास करते हैं कि सेवार्थी की स्वाभाविक अवस्था में व्यवधान न होने पाए।

मनोवैज्ञानिक की सहभागिता के आधार पर व्यवहारपरक प्रेक्षण दो प्रकार का होता है। उद्देश्यों पर निर्भर करते हुए मनोवैज्ञानिक यह निर्णय ले सकता है कि क्या उसे सहभागी प्रेक्षण विधि का चयन करना है या एक गैर-सहभागी प्रेक्षण विधि।

एक सहभागी प्रेक्षण विधि वह है जिसमें मनोवैज्ञानिक जिस समूह का प्रेक्षण होता है, उसका एक हिस्सा बन जाता है। उदाहरणार्थ - 'कुंभ पर्व', भारत में हिन्दुओं के एक धार्मिक पर्व के दौरान, एक मनोवैज्ञानिक संन्यासीयों के एक समूह का हिस्सा बनने की योजना बना सकता है और इस प्रकार वह उस समूह की सभी गतिविधियों में हिस्सा लेगा तथा प्रेक्षणों को सावधानीपूर्वक लिखेगा। यहाँ पर, प्रेक्षक का स्व-अनुभव, समूह में व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं व्यवहार के तरीके को समझने में उसकी बेहतर तरीके से सहायता कर सकता है। दूसरी तरफ, उसके अपने अनुभव संन्यासीयों के समूह के दृष्टिकोण को परिवर्तित कर सकते हैं।

प्रेक्षण की एक अन्य विधि गैर-सहभागिता है : इसे प्रकृतिवादी प्रेक्षण विधि भी कहा जाता है। इसमें प्रेक्षक समूह के सदस्य के रूप में भाग नहीं लेता है बल्कि सेवार्थी के बारे में प्रेक्षणों को लिखने के लिए सेवार्थी या समूह से दूर रहकर प्रेक्षण करता है। इसे व्यवहारक प्रेक्षण की अच्छी विधि के रूप में समझा जाता है क्योंकि प्रेक्षक से बिना किसी हस्तक्षेप के सेवार्थी एक स्वाभाविक परिवेश में व्यवहार एवं पारस्परिक क्रिया करता है। इस विधि की केवल यह कमी है कि इसमें बहुत अधिक समय लगता है। बहुत बार प्रेक्षक सेवार्थी का प्रेक्षण करने के लिए पूरा दिन बैठा रहता है और जिसका प्रेक्षण करने का उसने निर्णय लिया है, उस बारे में कुछ भी लिखने हेतु कोई भी महत्वपूर्ण प्रेक्षण उपलब्ध नहीं हो पाता है।

व्यवहारपरक प्रेक्षण विधि विशिष्ट परिस्थितियों में उपयोगी होती है। उदाहरणार्थ - बच्चे के व्यवहार का घर की व्यवस्था में प्रेक्षण करना या विद्यालय व्यवस्था में शिक्षा द्वारा बच्चे का प्रेक्षण करना या मनोवैज्ञानिक द्वारा सेवार्थी का अपने क्लिनिक में प्रेक्षण करना। प्रेक्षण को व्यवस्थित तरीके से करने की आवश्यकता होती है तथा रिकार्ड को उपयुक्त तरीके से रखने की आवश्यकता होती है। इसमें प्रेक्षण का समय, प्रेक्षण की अवधि, एक दिन में प्रेक्षण की आवृत्ति एवं प्रेक्षण का संदर्भ आदि जानकारियाँ हो सकती हैं।

फायदे - यह सीधी जानकारी प्रस्तुत करता है जब व्यक्ति एक व्यवहार में लगा हुआ है। इसलिए, यह अधिक सटीक हो सकता है।

कमियाँ - प्रत्यक्ष विधि की दो कमियाँ हैं : (v) पर्यवेक्षक पूर्वाग्रह प्रेक्षक के अपने पूर्वाग्रह, आस्था एवं मूल्य व्यवस्था हो सकते हैं जो प्रेक्षण प्रक्रिया एवं प्रेक्षण की उचित व्याख्या को

प्रभावित कर सकते हैं, और (ब) पर्यवेक्षक प्रभाव - इसका अर्थ है कि जब व्यक्ति को यह पता होता है कि उसका प्रेक्षण किया जा रहा है तो उस पर उसका प्रभाव पड़ता है। वह सचेतन हो सकता है और ऐसी संभावना रहती है कि वह स्वाभाविक प्रतिक्रिया या व्यवहार न दिखाए।

2.5.2 साक्षात्कार (Interview)

जैसा कि आप जानते हैं कि साक्षात्कार में व्यक्ति/साक्षात्कार देने वाले से उसके व्यवहार के बारे में प्रश्न पूछना निहित होता है। परन्तु यह नौकरी के साक्षात्कार की तरह नहीं होता है जो अधिक औपचारिक होता है। यहाँ पर साक्षात्कार बिना किसी विशेष प्रश्न को शामिल किए अर्ध-संरचित या यहाँ तक कि असंरचित हो सकता है तथा जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, यह साक्षात्कार लेने वाले और साक्षात्कार देने वाले के बीच एक संवाद के रूप में होने लगता है। चाहे यह अर्ध-संरचित हो या असंरचित, व्यक्तित्व मूल्यांकन की विधि के रूप में साक्षात्कार का उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार तथा व्यक्तित्व के तरीकों के बारे में जानकारी एकत्रित करना होता है।

इस प्रकार, एक साक्षात्कार आपको सेवार्थी से प्रत्यक्ष रूप से प्रश्न पूछने की अनुमति देता है। साक्षात्कार के प्रश्न पूर्वनिर्धारित होते हैं। जिसके आधार पर साक्षात्कार संरचित (structured), अर्ध-संरचित (semistructured) या असंरचित (unstructured) किया जा सकता है।

संरचित साक्षात्कार उसे कहते हैं जिसमें मनोवैज्ञानिक के पास पूर्वनिर्धारित प्रश्नों का सेट होता है जिसमें सेवार्थी या प्रतिभागी से एक शब्द या एक वाक्य में अंतर की अपेक्षा की जाती है। यह साक्षात्कार सेवार्थी से तथ्यों का सत्यापन करने के लिए आयोजित किया जाता है और यह प्रायः तब होता है जब मनोवैज्ञानिक पहले से ही निष्कर्ष निकाल चुका होता है और केवल तथ्यों का सत्यापन कर रहा है या जानकारियों में छिटपुट अन्तरों को भरने की कोशिश कर रहा है। इस प्रकार के साक्षात्कार में अधिक समय नहीं लगता है परन्तु बहुत सीमित जानकारियाँ ही मिल पाती हैं। यहाँ पर, साक्षात्कार के दौरान मनोवैज्ञानिक का पूरा नियंत्रण रहता है।

अर्ध संरचित साक्षात्कार साक्षात्कार का सर्वश्रेष्ठ रूप है क्योंकि यह मनोवैज्ञानिक को आवश्यकता के आधार पर जब भी आवश्यकता होती है, विशिष्ट एवं विस्तृत प्रश्न पूछने की अनुमति प्रदान करता है। इस साक्षात्कार में भी पूर्व निर्धारित प्रश्न होते हैं। इसमें, मनोवैज्ञानिक का साक्षात्कार पर नियंत्रण होता है। अर्ध संरचित साक्षात्कार मनोवैज्ञानिकों को जानकारियों पर ध्यान देने की अनुमति देते हैं जो कि विशिष्ट है और उसी समय जानकारियों के उन अस्पष्ट क्षेत्रों का अन्वेषण करने की अनुमति देते हैं जिसका उन्होंने अन्वेषण नहीं किया है।

एक असंरचित साक्षात्कार में एक प्रश्न से दूसरे प्रश्न की तरफ बढ़ते हैं तथा सेवार्थी से जानकारियों की विस्तृत मात्रा संग्रहित की जा सकती है। इस प्रकार के साक्षात्कार में, सत्र का लक्ष्य या उद्देश्य सेवार्थी के बारे में जानकारियों का केवल अन्वेषण करना होता है। यह विधि बहुत अधिक समय लेती है तथा प्रासंगिक जानकारियों को प्राप्त कर भी सकती है या नहीं भी कर सकती है।

अतः, साक्षात्कार स्व-रिपोर्ट की एक तकनीक है। यह आंकड़ों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करा सकता है क्योंकि साक्षात्कारकर्ता व्यक्ति के अनेक पक्षों पर विचार कर सकता है, जैसे-मौखिक प्रतिक्रिया, साथ ही साथ चेहरे की अभिव्यक्ति के गैर-मौखिक पहलू, आवाज का

स्वर, शरीर की भाषा, तौर-तरीके आदि। व्यक्ति का केवल प्रेक्षण करने या व्यक्तित्व सूचीओं (आगे परिचर्चा की जाएगी) से प्राप्त प्रतिक्रियाओं की तुलना में ये सब अधिक जानकारियां प्रदान करते हैं। साक्षात्कार से गहन जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है।

फायदे: साक्षात्कार विधि की सहायता से मौखिक एवं गैर-मौखिक अत्यधिक प्रासंगिक एवं गहन जानकारियां संग्रहित की जा सकती है। मनोवैज्ञानिक आकलन की अन्य विधियों की तुलना में साक्षात्कार अधिक लचीलापन देता है।

कमियां

- **उचित व्याख्या का पूर्वाग्रह (Bias of interpretation)** - साक्षात्कारकर्ता के पूर्वाग्रहों, उसकी आस्था/रूढ़ियां सेवार्थी की अनुक्रियाओं की उचित व्याख्या को प्रभावित कर सकती है।
- **परिवेश प्रभाव (halo effect)** - जोकि साक्षात्कार के प्रारंभ में सेवार्थी के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक प्रथम प्रभाव निर्मित कर सकता है। यह सेवार्थी के साथ अनुवर्ती पारस्परिक क्रिया को प्रभावित कर सकता है।
- **साक्षात्कारकर्ता की सब्जेक्टिविटी (subjectivity)** - जैसा कि साक्षात्कारकर्ता व्यक्ति का साक्षात्कार लेने एवं अनुक्रियाओं की उचित व्याख्या करने में निर्णायक भूमिका अदा करता है, अतः साक्षात्कारकर्ता की व्यक्तिनिष्ठता परिणाम को प्रभावित कर सकती है।
- **विश्वसनीयता एवं वैधता की कमी** - जैसा कि हमने पहले परिचर्चा की है, विश्वसनीयता एवं वैधता एक अच्छे मनोवैज्ञानिक परीक्षण के दो गुण हैं। असंरचित एवं अर्ध-संरचित साक्षात्कार में साक्षात्कार की व्यक्तिपरक प्रकृति के कारण विश्वसनीयता एवं वैधता कम होगी। दूसरी तरफ, यदि साक्षात्कार संरचित है तो यह अधिक मात्रा में उपयोगी जानकारी प्रदान नहीं कर सकता है।
- **अत्यधिक समय** - यदि साक्षात्कार से वास्तव में गहन एवं उपयोगी जानकारी प्राप्त करता है तो इसमें अधिक समय एवं शक्ति लगाने की आवश्यकता होगी।
- **साक्षात्कार लेना आसान नहीं** - साक्षात्कार केवल प्रश्न पूछना ही नहीं है। यह एक कौशल है तथा इसमें मापित पहलू के बारे में वास्तव में प्रासंगिक एवं उचित जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ताओं की आवश्यकता होती है।

2.5.3 व्यक्तित्व सूचियां (Personality Inventories)

व्यक्तित्व सूचियां प्रश्नावली या पैमाने होती है जिसमें प्रश्न/कथन निहित होते हैं तथा व्यक्ति या परीक्षार्थी को विशिष्ट मानकीकृत प्रारूप में इनके उत्तर देने की आवश्यकता होती है। अतः, इन्हें पेपर एवं पेंसिल परीक्षण कहते हैं। यह कम्प्यूटर पर आधारित परीक्षण के रूप में भी हो सकता है। सूचियां व्यक्तित्व आकलन की सर्वाधिक व्यापक रूप से प्रयोग की जाने वाली विधि है।

इसे स्व-रिपोर्ट भी कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति प्रश्नों के उत्तर स्वयं देता है जबकि इसके विपरीत प्रत्यक्ष प्रेक्षण विधि में, शोधकर्ता व्यक्ति का प्रेक्षण करता है तथा आँकड़ें एकत्रित करता है। सूचियां के विपरीत साक्षात्कार में व्यक्ति साक्षात्कारकर्ता को बढ़ा चढ़ाकर उत्तर तथा विस्तृत वर्णन दे सकता है जबकि व्यक्तित्व सूचियां में सामग्रियों/प्रश्नों की एक

मानकीकृत सूची होती है तथा केवल एक विशिष्ट प्रारूप जैसे - 'सहमत', 'असहमत' या 'हाँ', 'ना' में देने की आवश्यकता होती है। अतः, इसमें साक्षात्कार की तरह खुले सिरों वाले प्रश्न नहीं होते हैं।

विस्तृत रूप से प्रयोग की जाने वाली व्यक्तित्व सूचियाँ के कुछ उदाहरण हैं - मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनैलिटी इन्वेन्टरी (MMPI), सिक्सटीन पर्सनैलिटी फैक्टर (16 PF), NEO-PI, मायर्स ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (MBTI), कैलिफोर्निया साइकोलॉजिकल इनवेंटरी (CPI), आइसेक पर्सनैलिटी क्यूष्चनायर, (EPQ) तथा पर्सनल प्रिफरेंस षेड्यूल (EPPS)। व्यक्तित्व सूचियाँ प्रायः बहुत से विशेषकों का आकलन करती हैं।

मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनैलिटी इन्वेन्टरी (MMPI)

MMPI 1930 में विकसित की गई तथा इस पर बहुत शोध हुआ है एवं संशोधित की गई हैं। इसके नवीनतम संस्करण में MMPI-2 (बूचर, डैल्स्ट्राम, ग्रादम, टेलिफोन तथा कीमर, 1989) एवं MMPI-2 एडोलसेंट (MMPI-A, बूचर एंड विलियम्स, 1992) निहित हैं। MMPI-2 में 567 सही/गलत कथनें (items) हैं। इसमें दस मापक तथा चार वैधता मापक हैं। यह परीक्षण व्यक्ति में मनोविकारों की संभावना का आकलन करने के उद्देश्य पर आधारित है। MMPI-2 को भी संशोधित किया गया है तथा इसे मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनैलिटी इन्वेन्टरी-2 रिस्ट्रिक्चर्ड फार्म (MMPI-2-RF) कहा जाता है। यह 2008 में विकसित किया गया तथा इसमें 338 सही/गलत कथनें हैं।

MMPI-A को विशेष रूप से किशोरों के लिए 478 कथनें तथा आयु उपयुक्त मानदंडों के प्रावधान के साथ विकसित किया गया है।

यद्यपि MMPI को मनोविकारों का आकलन करने के लिए विकसित किया गया था परन्तु इसका चिकित्सीय एवं सामान्य लोगों दोनों के लिए विस्तृत रूप से प्रयोग किया जाता है। MMPI को भारतीय लोगों के अनुसार भी अनुकूलित किया गया है जिसे मल्टी-फेजिक क्यूष्चनायर (चट्टोपाध्याय, सोम एंड विश्वास, 1993) के नाम से जाना जाता है।

कैलीफोर्निया साइकोलॉजिकल इन्वेन्टरी (CPI)

MMPI के विपरीत कैलीफोर्निया साइकोलॉजिकल इन्वेन्टरी (CPI) को सामान्य वयस्क लोगों के लिए विशेष रूप से विकसित किया गया है। CPI की कई कथनें MMPI से ली गई हैं। CPI का नवीनतम संस्करण तीसरा संस्करण है जिसमें 434 सही/गलत कथनें तथा 20 मापक (गफ एंड ब्रैडली, 1996) निहित हैं। CPI का एक संक्षिप्त रूप भी है जिसमें 260 कथनें उपलब्ध हैं (गफ, 2002)।

मनोविक्षुब्धता, बहिर्मुखता, खुलापन-व्यक्तित्व सूची - संशोधित (NEOPI-R):

कोस्टा एवं मैक्रे (1995) के द्वारा विकसित यह परीक्षण व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए विस्तृत रूप से प्रयोग किया जाता है। यह व्यक्तित्व के पंच कारक मॉडल पर आधारित है जिसे आप इकाई 1 में पढ़ चुके हैं। NEOPI-R का सामान्य व्यक्तियों, वयस्कों एवं किशोरों दोनों के साथ प्रयोग किया जाता है। यह माप व्यक्तित्व के पाँच कारकों जैसे - मनोविक्षुब्धता, बहिर्मुखता तथा अनुभव के प्रति खुलापन, सहमतता एवं कर्तव्यनिष्ठा का आकलन करता है। इस पांच आयामों में प्रत्येक के अंतर्गत छः उप-माप हैं जिसे पहलू कहते हैं। इस माप में कुल 240 कथनें/प्रश्न हैं।

सिक्सटीन पर्सनैलिटी फैक्टर क्यूश्चनायर (16PF)

यह परीक्षण ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक कैटेल के द्वारा विकसित किया गया है जो व्यक्तित्व के 16 मूल विशेषकों (source traits) पर आधारित है। पहले यह 1949 में विकसित किया गया परन्तु वर्तमान में इस मापक का पांचवा संशोधन (कैटेल, कैटेल एंड कैटेल, 1993) प्रयोग किया जा रहा है। यह 16 वर्ष एवं उसके ऊपर के आयुवर्ग के लिए प्रयोग किया जाता है। व्यक्तित्व के 16 कारकों/आयामों पर पहुँचने के लिए कैटेल ने कारक विश्लेषण का प्रयोग किया है। ये 16 मूल विशेषक एक सांत्यक पर हैं जो सांत्यक के एक शिरे से शुरू होकर दूसरे शिरे तक फैला है। उदाहरणार्थ - 'गर्मजोश' का कारक एक शिरे पर गर्मजोश होने तथा घुलने-मिलने से लेकर सांत्यक के अगले शिरे तक प्रतिबंधित, पांतिप्रिय तथा अलग-थलग होने तक फैला है। कैटेल एवं उसके साथियों ने उम्र में छोटे आयु वर्गों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए मापक विकसित किए हैं जैसे - एडोलसेंट पर्सनैलिटी क्यूश्चनायर (APQ) 12 से 18 वर्षों के आयु वर्ग के लिए (ष्युरजर, 2001)। APQ को पहले हाई स्कूल पर्सनैलिटी क्यूश्चनायर या HSPQ के नाम से जाना जाता था। इसके पश्चात् हमारे पास चिल्डेन्स पर्सनैलिटी क्यूश्चनायर, CPQ (पोर्टर एंड कैटेल, 1985) दि अर्ली स्कूल पर्सनैलिटी क्यूश्चनायर, ESPQ (कोन एंड कैटेल, 1959) तथा दि प्रि स्कूल पर्सनैलिटी क्यूश्चनायर, PSPQ (लिचेंस्टीन, ड्रेगर एंड कैटेल, 1986) हैं।

मायर्स-ब्रिग्स टाइप इंडिकेटर (MBTI)

यह चार व्यक्तित्व आयामों पर आधारित है, जैसे- (v) संवेदन/सहजबोध, (ब) चिंतन/भावना, (स) अंतर्मुखता/बहिर्मुखता, तथा (द) ग्रहण करना/पहचानना। ये आयाम एक साथ मिलकर 16 संभावित व्यक्तित्व के प्ररूप (types) प्रकार उपलब्ध कराते हैं। इनका प्रायः कैरियर चयन उद्देश्य के लिए प्रयोग किया जाता है।

व्यक्तित्व सूचियों की एक प्रमुख विशेषता झूठ का पैमाना (lie scale) या वैधता पैमाना (validity scale) है। इसमें यह जांचने के लिए कथन निहित होते हैं कि व्यक्ति ईमानदारी से उत्तर दे रहा है या धोखा दे रहा है।

प्रायः व्यक्ति आम जनता को अपने वांछनीय पहलुओं को दिखाना चाहते हैं या कभी-कभी जानबूझ कर धोखा देते हैं। सूचियां इस विषय में अति संवेदनशील होती हैं क्योंकि इसमें व्यक्ति प्रश्नों के उत्तर स्वयं देता है और इसकी पूरी संभावना होती है कि वह अपनी इच्छा के अनुसार उत्तर देगा। इस पहलू का ध्यान साक्षात्कार विधि जानकारी के गहन रूप में जाकर करती है। परन्तु व्यक्तित्व सूचियां अनेक अनुक्रिया पूर्वाग्रहों (response biases):- सामाजिक वांछनीयता (अपने आप को सामाजिक रूप से वांछनीय तरीके से पेश करना, जिसे समाज मंजूरी देता है), अच्छे होने का ढोंग करना (स्वयं को सकारात्मक रूप से दिखाना), बुरे होने का ढोंग करना (स्वयं को नकारात्मक रूप में दिखाना), हां कहना (परीक्षण प्रश्नों के विषयवस्तु का ध्यान दिए बिना सहमति रूप से उत्तर देना), तथा न कहना (परीक्षण प्रश्नों की विषयवस्तु का ध्यान दिए बिना असहमत अनुक्रियाएं देना) के प्रति संवेदनशील हैं। परीक्षण प्रश्नों को तैयार करते समय इन पक्षपातों का सामान्य रूप से ध्यान रखा जाता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि सूचियां/स्व रिपोर्ट के प्रकरण में, पूर्वाग्रह प्रतिभागी/सेवार्थी की तरफ से होते हैं, वहीं पर साक्षात्कार, प्रेक्षण, तथा प्रक्षेपीय तकनीकों में पूर्वाग्रह साक्षात्कारकर्ता/शोधकर्ता की तरफ से होते हैं।

फायदे: व्यक्तित्व सूचियों को आसानी से लिया जा सकता है, आसानी से आयोजित किया जा सकता है तथा आसानी से अंकगणना एवं उचित व्याख्या की जा सकती है। इसमें समय कम लगता है तथा समूह में आयोजित की जा सकती हैं। जैसा कि सूचियों को प्रदान करने

का मानकीकृत तरीका होता है, अतः दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए कोई भी इसका आयोजन कर सकता है। इस प्रकार, प्रक्षेपीय तकनीकों की तरह एक व्यक्तित्व सूची को आयोजित करने के लिए गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि, जैसा कि हमारे आचारनीति में उल्लेख किया है, इसे केवल उनके द्वारा आयोजित किए जाने की आवश्यकता होती है जिसने इसका अध्ययन किया है।

सूचियां/प्रश्नावली में वैधता मापक भी होते हैं जो कि यह चेक करती है कि परीक्षार्थी ईमानदारी से उत्तर दे रहा है या धोखा कर रहा है।

कमियां

- प्रतिभागी सही उत्तरों के बजाय सामाजिक रूप से उपयुक्त उत्तर दे सकता है।
- सांस्कृतिक प्रभावों के कारण उनकी अनुक्रियाओं में विविधता हो सकती है।
- प्रतिभागी उत्तरदायित्व तरीके या ईमानदारी से उत्तर नहीं दे सकते हैं। बिना प्रश्नों को वास्तविक रूप में समझे कोई भी उत्तर दे सकते हैं। यह इस कारण की वजह से हो सकता है कि परीक्षार्थी की अभिरूचि नहीं है और वह उदासीन है। इसलिए, मनोदशा तथा सांवेगिक-प्रेरक पहलुओं को महत्वपूर्ण कारकों के रूप में समझना चाहिए।

स्व आकलन प्रश्न 2

1) वे कौन से क्षेत्र हैं जिनमें व्यक्तित्व मूल्यांकन का प्रयोग किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यवेक्षक प्रभाव किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) असंरचित साक्षात्कार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) 'परिवेश प्रभाव' (halo effect) की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5.4 निर्धारण पैमाने (Rating Scales)

निर्धारण पैमाने में मानकीकृत प्रश्न होते हैं जिन्हें एक निश्चित मानदंड पर मापा जाता है। उदाहरणार्थ - शिक्षक सामाजिकता या पहल लेने के गुण के संदर्भ में विद्यार्थी को माप सकता है। इस प्रकार, निर्धारण पैमाने में स्वयं संबंधित व्यक्ति के द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा (जैसे अभिभावक, शिक्षक, निरीक्षण आदि) व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में निर्धारण किया जाता है। दोनों प्रकरणों में, लाभ के साथ-साथ कमियां भी हैं। आप स्वयं को किसी और व्यक्ति की तुलना में सबसे बेहतर तरीके से जानते हैं अतः आप स्वयं का निर्धारण अधिक बेहतर एवं अधिक सटीक तरीके से कर सकते हैं। हालांकि, यह भी संभावना है कि आप स्वयं का अच्छे रूप में निर्धारण कर सकते जबकि शायद यह सच नहीं हो चूंकि ऐसा करके आपकी छवि अच्छी बनी रहेगी। इसे सामाजिक वांछनीयता प्रभाव कहा जाता है जिसका मतलब है कि व्यक्ति उस प्रकार से कार्य करता है जैसा कि समाज के अनुसार वांछनीय है। सामाजिक वांछनीयता प्रभाव व्यक्तित्व सूचियां, और साक्षात्कार के मामले में भी कार्य कर सकता है। आगे, जब किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा निर्धारण की जाती है तब यह पक्षपातपूर्ण प्रतिक्रिया दे सकता है।

फायदें: स्वयं के द्वारा निर्धारण करना आकलित किए जा रहे व्यवहार/विशेषक का एक बेहतर दृष्टिकोण प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, अन्य महत्वपूर्ण लोगों के द्वारा निर्धारण भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का बेहतर सटीक दृष्टिकोण प्रदान करेगा क्योंकि वे व्यक्ति को एक विशेष तरीके से जानते हैं।

कमियां: यदि निर्धारण ईमानदारी से नहीं किया जाता है तो यह पक्षपातपूर्ण अनुक्रिया तथा सामाजिक रूप से वांछनीय अनुक्रियाओं के परिणाम के रूप में हो सकता है। लोग स्वयं के बारे में हमेशा एक अच्छी अवधारणा प्रस्तुत करना चाहते हैं जो परीक्षण प्रश्नों के प्रति उनकी अनुक्रियाओं/निर्धारणों को प्रभावित कर सकता है।

2.5.5 व्यवहारपरक आंकड़े (Behavioural Data)

जैसा कि हम पहले बताए प्रत्यक्ष प्रेक्षण में देख चुके हैं, उसी प्रकार से व्यवहारपरक आंकड़ों में व्यक्ति के व्यवहार का प्रेक्षण शामिल होता है। अंतर यह है कि इसमें व्यवहार का प्रेक्षण करने के लिए किसी शोधकर्ता/मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि यह कार्य एक यंत्र के द्वारा किया जाता है। मेहल, पेनीबेकर, डब्स एंड प्राइस (2001) ने विद्युत रूप से सक्रिय रिकार्ड (Electronically activated record EAR) निर्मित किया है जो व्यक्ति के द्वारा पहना जाता है, यह बिना किसी व्यवधान के उसके वास्तविक दुनिया के पल-पल की पारस्परिक क्रियाओं की निगरानी करता है। यह यंत्र श्रवण सूचना को पकड़ता है और उनके व्यक्तित्व विशेषकों के साथ संबंधित करता है। उदाहरणार्थ (मेहल, गॉसलिंग

एंड पेनीबेकर, 2006) अध्ययनों में पाया कि सर्वाधिक खुश व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अधिक सामाजिक पारस्परिक क्रिया करते हैं।

इस प्रकार, EAR यंत्र व्यक्तित्व का वस्तुनिष्ठ आकलन करने में सहायता करता है जैसा दैनिक जीवन में परिलक्षित होता है।

फायदें: यह स्वाभाविक या वास्तविक जीवन में वस्तुनिष्ठ माप उपलब्ध करता है। यह यंत्र पहन करके व्यक्ति अपनी दैनिक पारस्परिक क्रिया में लगा रहता है और ये विश्लेषण के श्रवण के रूप में रिकार्ड होते रहते हैं। इस प्रकार से यह वास्तविक जीवन की जानकारियों का एक बहुमूल्य साधन प्रस्तुत करता है।

कमियां: व्यक्ति यंत्र के बारे में सचेत हो सकता है तथा स्वाभाविक रूप से व्यवहार नहीं कर सकता है।

2.5.6 स्थितिपरक परीक्षण (Situational Tests)

स्थितिपरक परीक्षण जैसा कि नाम से ही पता चलता है, व्यक्ति का सावधानीपूर्वक निर्मित परिस्थितियों में आकलन करना निहित है। यहाँ पर व्यक्ति का व्यवहार एक उद्देश्यपूर्ण ढंग से निर्मित परिस्थिति में प्रेक्षण किया जाता है।

व्यक्तित्व के स्थितिपरक परीक्षण का इस्तेमाल सर्वप्रथम द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान महत्वपूर्ण बाहरी कार्यभार के लिए मिलिट्री कर्मचारियों के चयन के लिए किया गया था। इस परीक्षण का एक रूपांतर परिस्थितीय दबाव परीक्षण है जिसमें व्यक्ति को अनेक दबावयुक्त, विक्षिप्त करने वाली या सांवेगिक रूप से बाधायुक्त परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करनी होती है जहाँ पर उसके मददगार प्रतिरोधी एवं असहयोगी होते हैं।

हार्टषोर्न, मे और उनके सहयोगियों (1928, 1929, 1930) ने स्थितिपरक परीक्षण का प्रयोग चरित्र शिक्षा जांच (Character Education Enquiry) (CEE) के लिए किया। इसमें बच्चों का स्वाभाविक परिस्थितियों जैसे विद्यालय के मैदान में खेलते हुए या गृहकार्य करते हुए या कक्षा परीक्षा आदि में आकलन करना शामिल था जहाँ बच्चा परीक्षण होने के बारे में जागरूक नहीं है। यह परीक्षण परोपकारिता, ईमानदारी तथा आत्म-नियंत्रण जैसे विशेषकों को मापता है।

फायदें: स्थितिपरक परीक्षणों में वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने का फायदा होता है। वास्तव में, इसमें अच्छी तरह से निर्मित प्रेक्षणों के माध्यम से स्वाभाविक व्यवस्था के साथ-साथ नियंत्रित तरीके से आकलन हेतु दोहरा फायदा है।

कमियां: स्थितिपरक परीक्षणों में बहुत अधिक समय लगता है तथा अधिक शक्ति एवं योजना की आवश्यकता होती है। इसमें यह भी समस्या होती है कि क्या निरीक्षणकर्ता सहभागी के रूप में रहेगा या गैर-सहभागी के रूप में रहेगा (यह हम पहले के भागों में परिचर्चा कर चुके हैं)। इससे आगे, स्थितिपरक परीक्षण के दौरान 'क्या प्रेक्षण करना है', यह भी एक मुद्दा है।

2.5.7 प्रक्षेपीय तकनीकें (Projective Techniques)

व्यक्तित्व के प्रक्षेपीय माप विस्तृत रूप से प्रयोग किए जाने वाले व्यक्तित्व आकलन उपकरण हैं। स्व रिपोर्ट मापों से भिन्न जिसमें व्यक्ति को संरचित परीक्षण उद्दीपक उपलब्ध किया जाता है, प्रक्षेपीय परीक्षणों में व्यक्ति को असंरचित या अस्पष्ट उद्दीपक के

प्रति अनुक्रिया देनी होती है। प्रक्षेपीय परीक्षणों में असंरचित परीक्षण उद्दीपक प्रयोग करने के पीछे यह आधारभूत पूर्वानुमान है कि व्यक्ति अपनी अव्यक्त या अचेतन भावनाओं, आवश्यकताओं, संवेगों, उद्देश्यों आदि को अस्पष्ट उद्दीपक पर प्रक्षेपित करता है। प्रक्षेपण के रूप में व्यक्ति की अनुक्रियाएं उसके व्यक्तित्व के स्वभाव को परिलक्षित करती हैं।

प्रक्षेपीय तकनीकें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषक दृष्टिकोण पर आधारित हैं जो कहता है कि व्यक्तित्व का वास्तविक स्वरूप अचेतन के गहन में निहित है। अतः, सूचियों में पूछे गए प्रश्न के प्रति अनुक्रियाएं या साक्षात्कार व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही विशेषताओं को परिलक्षित नहीं कर सकता है। प्रक्षेपीय तकनीकों के अनुसार, प्रत्यक्ष विधि व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने में सक्षम नहीं हैं और इसे केवल अप्रत्यक्ष विधि के द्वारा ही प्रकट किया जा सकता है। इससे आगे, जब व्यक्ति चौकस हैं तथा जानता है कि क्या पूछा जा रहा है तब ऐसी स्थिति में सामाजिक वांछनीयता कार्य कर सकती है और कभी-कभी सही उत्तर देने के लिए व्यक्ति अपने वास्तविक व्यक्तित्व से परिचित नहीं हो सकता है। अतः, प्रक्षेपीय तकनीकों के समान अप्रत्यक्ष माप व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने में अधिक प्रभावी हैं। जबकि प्रक्षेपीय परीक्षण अचेतन को पकड़ते हैं तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व को उनकी प्रक्रियाओं की उचित व्याख्या के द्वारा प्रकट करते हैं। इस प्रकार की अनुक्रियाओं की उचित व्याख्या करने के लिए गहन प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

प्रक्षेपीय तकनीकों में कुछ चित्रों या आरेखों पर आधारित एक कहानी बनाना शामिल होता है। अचेतन भावनाएं, संवेग या विचार इन्हीं आरेखों, चित्रों या कहानियों पर प्रक्षेपित होते हैं जिन्हें बाद में, व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता लगाने के लिए विश्लेषित किया जाता है।

अधिकतर प्रयोग की जाने वाली कुछ प्रक्षेपीय तकनीकों के बारे में नीचे परिचर्चा की गई है।

रोशा इंकब्लॉट टेस्ट (रोशा, 1921) में अस्पष्ट दृश्य उद्दीपक को प्रदर्शित करने वाले 10 स्याही के धब्बे निहित होते हैं। ये सेवार्थी को एक-एक करके दिखाए जाते हैं और उनसे कहा जाता है कि जो कुछ उनके दिमाग में आता है, उसे ही सामान्य रूप से बताइए। अंकगणना अनुक्रियाओं के विभिन्न तत्वों पर आधारित होती है जैसे - विषयवस्तु, आकार के संदर्भ में, रंग, प्रतिरूप का हिस्सा या संपूर्ण आदि। अनुक्रियाओं की अंकगणना एवं उचित व्याख्या व्यापक एवं विस्तृत होती है। व्यक्ति को रोशा परीक्षण का आयोजन करने एवं अंकगणना करने में वास्तव में प्रशिक्षित होने की आवश्यकता होती है।

थेमैटिक एपरसेप्शन टेस्ट (TAT) मुरे एवं मोरगन (1930) के द्वारा विकसित किया गया जिसमें काले एवं सफेद रंग के 20 चित्र कार्ड निहित हैं। सेवार्थी को प्रत्येक चित्र को देखने के लिए कहा जाता है, और इसके बारे में कहानी बताने के लिए कहा जाता है, जो रोशा के स्याही के धब्बे परीक्षण को तुलना में संरचित एवं सार्थक है। कहानियों से परिलक्षित व्यक्ति के अभिप्रेरणा विशेषकों का मापना यह परीक्षण का उद्देश्य है।

उमा चौधरी द्वारा 1960 में TAT का भारतीय अनुकूलन विकसित किया गया। इसे भारतीय लोगों के लिए संशोधित करके 14 कार्डों में कर दिया गया है।

चिल्ड्रेन एपरसेप्शन टेस्ट (TAT) बेलाक एंड बेलाक (1949) द्वारा विकसित किया गया जो कि TAT पर आधारित है जो वयस्कों के लिए है। CAT कार्डों में मानव आकृतियों के स्थान पर पशुओं की आकृतियों का प्रयोग किया गया है क्योंकि यह 3 से 10 वर्ष तक के बच्चों के लिए है।

वाक्य समापन परीक्षण में अपूर्ण वाक्यों होते हैं जिन्हें सेवार्थी को पूरा करने की आवश्यकता होती है।

कुछ अन्य प्रक्षेपीय परीक्षण हैं - ड्रा-ए-पर्सन (DAP) परीक्षण तथा रोजेनवर्ग पिक्चर-फ्रस्ट्रेशन स्टडी।

प्रक्षेपीय तकनीकों का चिकित्सकीय उद्देश्यों के लिए व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है।

फायदें: व्यक्तित्व के छिपे हुए पहलू जैसे अचेतन उद्देश्य, इच्छाएं एवं द्वन्द्व सामने आते हैं। अतः, यह व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही प्रकृति परिलक्षित कर सकता है।

कमियां:

- प्रक्षेपीय तकनीकें स्वभाव में व्यक्तिनिष्ठ होती हैं, यद्यपि अंकगणना के लिए पूर्व निर्धारित श्रेणियां प्रयोग की जाती हैं तथा उचित व्याख्या करने के लिए विवरणों को निर्दिष्ट किया जाता है। अंकगणना की एक्सनर (1986) विधि अनुक्रियाओं की अंकगणना के लिए बेहतर मानकीकृत तरीके उपलब्ध करती है।
- निम्न-स्तरीय विश्वसनीयता एवं वैधता
- अधिक समय लगना
- प्रक्षेपीय परीक्षणों के आयोजन, अंकगणना तथा उचित व्याख्या में कौशल एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, उपर्युक्त भागों में हमने व्यक्तित्व का आकलन करने की अनेक विधियों के बारे में सीखा है। जैसा कि व्यक्तित्व एक एकआयामी विशेषता नहीं है इसलिए व्यक्तित्व का मूल्यांकन किसी एक अकेली तकनीक पर आधारित नहीं हो सकता है। यदि हम व्यक्ति के व्यक्तित्व किसी एक व्यापक, बेहतर एवं सही समझ रखना चाहते हैं तो हमें व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने की अनेक विधियों का संयोजन करने की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त परिचर्चा की गई व्यक्तित्व मूल्यांकन की अनेक विधियाँ व्यक्तित्व के विभिन्न उपागमों के द्वारा दिशा निर्देशित होती हैं। उदाहरणार्थ, व्यक्तित्व सूचियां विशेषक सिद्धांतों के द्वारा प्रभावित होती हैं। प्रत्यक्ष प्रेक्षण, साक्षात्कार एवं निर्धारण पैमाने को शामिल करते हुई व्यवहारवादी आकलन व्यक्तित्व के व्यवहारवादी तथा अधिगम उपागमों के द्वारा दिशा-निर्देशित होते हैं। मनोविश्लेषण उपागम व्यक्तित्व के मूल्यांकन की प्रक्षेपीय तकनीकों के लिए अन्तर्निहित कारक है। फिर भी, व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के वास्तविक संदर्भ में उपागमों में लचीलापन है तथा परिस्थिति की आवश्यकता के आधार पर अनेक विधियां प्रयोग की जाती हैं।

स्व आकलन प्रश्न 3

1) सामाजिक वांछनीयता प्रभाव किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

2) प्रक्षेपीय तकनीकें व्यक्तित्व के किस दृष्टिकोण पर आधारित हैं?

.....

.....

.....

3) दो प्रक्षेपीय परीक्षणों के उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 सारांश

इस इकाई में आपने मनोवैज्ञानिक आकलन की अवधारणा और विशेष रूप से व्यक्तित्व के मूल्यांकन के बारे में सीखा है। किसी भी प्रकार के आकलन में जिन दो चीजों पर विचार करने की आवश्यकता होती है, वे अच्छे परीक्षण के गुण (जैसे - मानकीकरण, मानदंड, विश्वसनीयता तथा वैधता) और परीक्षण के आयोजन, अंकगणना एवं परीक्षण परिणामों की उचित व्याख्या करने के लिए आचारनीतीय दिशानिर्देश हैं। व्यक्तित्व मूल्यांकन का कई क्षेत्रों में उपयोग होता है जो शिक्षा, कैरियर से लेकर पमरामर्ष एवं चिकित्सीय व्यवस्था तक फैला है। व्यक्तित्व मूल्यांकन की अनेक विधियों का वर्णन किया गया जिसमें व्यक्तित्व के मूल्यांकन की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तकनीकें शामिल हैं। प्रत्येक विधियों के लाभ एवं कमियों के बारे में बताया गया है।

2.7 प्रमुख शब्द

मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन	: मानव विकास एवं व्यवहार के अनेक पहलुओं की माप करने के उद्देश्य पर आधारित है तथा मानव व्यवहार का वर्णन करने, व्याख्या करने एवं अनुमान लगाने में सहायता करता है।
मनोवैज्ञानिक परीक्षण	: जैसा कि एनास्टसी के द्वारा परिभाषित किया गया है, यह व्यवहार के एक नमूने का आवश्यक रूप से एक वस्तुनिष्ठ एवं मानकीकृत माप है।
मानकीकरण	: परीक्षण के आयोजन, अंकगणना तथा परीक्षण प्रतिक्रियाओं की उचित व्याख्या में एकरूपता से संबंधित।
सूचित सहमति	: परीक्षण के आयोजन के लिए सेवार्थी की सहमति प्राप्त करना तथा परीक्षण के उद्देश्य के बारे में उसे सूचित करना शामिल है।
व्यक्तित्व सूचियां	: प्रश्नावली या पैमाने हैं जिसमें प्रश्न/कथन निहित होते हैं तथा व्यक्ति या परीक्षार्थी को एक विशेष मानकीकृत प्रारूप में इनके उत्तर देने की आवश्यकता होती है।
निर्धारण पैमाने	: मानकीकृत प्रश्न निहित होते हैं जिन्हें एक निश्चित मानदंडों पर निर्धारित किया जाता है।
परिवेश प्रभाव	: साक्षात्कार के प्रारंभ में सेवार्थी के बारे में सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव से संबंधित है।

सामाजिक वांछनीयता प्रभाव : इससे तात्पर्य है कि व्यक्ति समाज की वांछनीयता के अनुसार कार्य करता है।

प्रक्षेपीय तकनीकें : आरेखों, चित्रों या कहानियों के द्वारा व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने की अप्रत्यक्ष विधियां हैं जो व्यक्ति की अचेतन भावनाओं, संवेगों या विचारों का परिलक्षित कर सकती हैं।

2.8 स्व आकलन प्रश्नों के उत्तर

स्व आकलन प्रश्न 1

- 1) सही
- 2) गलत
- 3) गलत
- 4) सही

स्व आकलन प्रश्न 2

- 1) व्यक्तित्व का मूल्यांकन अधिकतर शिक्षा, कैरियर, परामर्श तथा चिकित्सीय उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
- 2) पर्यवेक्षक प्रभाव व्यक्ति पर प्रेक्षण किए जाने के लिए महसूस करने वाले कारण के प्रभाव से संबंधित है।
- 3) असंरचित साक्षात्कार उस साक्षात्कार से संबंधित है जिसमें साक्षात्कार को दिशानिर्देशित करने के लिए कोई निश्चित या मानक प्रश्न नहीं होते हैं।
- 4) 'परिवेश प्रभाव' साक्षात्कार के प्रारंभ में सेवार्थी के बारे में प्रथम सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव स्थापित करने से संबंधित है जो बाद में प्रेक्षक का सेवार्थी के साथ पारस्परिक क्रिया में उसके प्रेक्षण को पक्षपातपूर्ण बना सकता है।

स्व आकलन प्रश्न 3

- 1) सामाजिक वांछनीयता प्रभाव का आशय है कि व्यक्ति समाज की वांछनीयता के अनुसार कार्य करने की कोशिश करता है।
- 2) प्रक्षेपीय तकनीकें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषण दृष्टिकोण पर आधारित हैं।
- 3) रोर्शा इंकब्लोट परीक्षण तथा थेमेटिक एपरसेप्शन परीक्षण

2.9 इकाई के अंत में प्रश्न

- 1) व्यक्तित्व मूल्यांकन की एक तकनीक के रूप में साक्षात्कार के लाभ एवं कमियों को एक-एक करके बताइए।
- 2) व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए प्रक्षेपीय परीक्षणों की उपयोगिता का विश्लेषण कीजिए।
- 3) मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए आचारनीतीय दिशा निर्देशों की परिचर्चा कीजिए।
- 4) व्यक्तित्व मूल्यांकन के लिए एक विधि के रूप में प्रेक्षण के बारे में परिचर्चा कीजिए तथा उनके लाभ बताइए।

2.10 संदर्भ

- Anastasi, A. & Urbina, S. (2017). *Psychological testing*. 7th ed. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.
- Booth-Kewley, S. & Vickers, R. R. (1994). Associations between major domains of personality and health behavior. *Journal of Personality*, 62 (3), 281-298.
- Butcher, J. N., Dahlstrom, W. G., Graham, J. R., Tellegen, A., & Kaemmer, B. (1989). *Minnesota Multiphasic Personality Inventory-2 (MMPI-2): Manual for administration and scoring*. Minneapolis: University of Minnesota Press.
- Butcher, J. N., & Williams, C. L. (1992). *Essentials of MMPI-2 and MMPI-A interpretation*. Minneapolis: University of Minnesota Press.
- Cattell, R. B., Cattell, A. K., & Cattell, H. E. (1993). *Sixteen Personality Factor Questionnaire*, Fifth Edition. Champaign, IL: Institute for Personality and Ability Testing.
- Chattopadhyay, P. K., Som, B., & Biswas, D. (1993). Air pollution and health hazards: An exploratory study. *Indian Journal of Clinical Psychology*, 20, 25-30.
- Coan, R. W. & Cattell, R. B. (1959). The development of the Early School Personality Questionnaire. *Journal of Experimental Education*, 28 (3), 143-152.
- Connolly, I. & O'Moore, M. (2003). Personality and family relations of children who bully. *Personality and Individual Differences*, 34, 1-8.
- Costa, P. T. Jr., & McCrae, R. R. (1995). Domains and Facets: Hierarchical personality assessment using the Revised NEO Personality Inventory. *Journal of Personality Assessment*, 64, 21-50.
- Exner, J. E. (1986). *The Rorschach: A comprehensive system. Volume 1: Basic foundations* (2nd ed.). New York: Wiley
- Gough, H. G. (2002). *CPI TM Bibliography*. Mountain View, CA: CPP, Inc.
- Gough, H. G., & Bradley, P. (1996). *CPI manual* (3rd ed.). Palo Alto, CA: Consulting Psychologists Press.
- Lichtenstein, D., Dreger, R. M., & Cattell, R. B. (1986). Factor structure and standardization of the Preschool Personality Questionnaire. *Journal of Social Behaviour and Personality*, 1 (2), 165-182.
- Mehl, M. R., Gosling, S. D., & Pennebaker, J. W. (2006). Personality in its natural habitat: manifestations and implicit folk theories of personality in daily life. *Journal of Personality and Social Psychology*, 90, 862-877.
- Mehl, M. R., Pennebaker, J. W., Crow, M. D., Dabbs, J., & Price, J. H. (2001). The electronically activated recorder (EAR): a device for sampling naturalistic daily activities and conversations. *Behaviour Research Methods, Instruments, and Computers*, 33, 517-523.
- Porter, R. B. & Cattell, R. B. (1985). *Handbook for the Children's Personality Questionnaire (CPQ)*. Champaign, IL: IPAT.

Schuerger, J. M. (2001). 16 PF Adolescent Personality Questionnaire. IL:IPAT.

Slee, P. T. & Rigby, K.(1993).The relationship of Eysenck's personality factors and self-esteem to bully-victim behavior in Australian schoolboys.*Personality and Individual Differences, 14*, 371-373.

Stevens, R. J., &Slavin, R. E.(1995). The cooperative elementary school: effects on syudents' achievement, attitudes and social relations. *American Educational Research Journal, 32*, 321-351.

Williams, J. E., Paton, C. C., Siegler, I. C., Eigenbrodt, M. L., Nieto, F. J., &Tyroler, H. A. (2000). Anger proneness predicts coronary heart disease risk: prospective analysis from the Artherosclerosis Risk in Communities (ARIC) Study. *Circulation. 101*, 2034-2039.

2.11अनुशंसित अध्ययन

Anastasi, A. &Urbina, S. (2017). *Psychological testing*. 7th ed. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.

Nunnally, J. C. Jr. (1959).*Tests and measurements: Assessment and prediction*. New York:Mcgraw -Hill Book Co.

Singh, A. K. (1997). *Tests, measurements and research methods in behavioral sciences*.BhartiBhawan, Patna.